रा. रा. वामनराव मोरेश्वर पाठक यांस
कृष्णसखा डीत जगन्नाथ यांनी वाचावयास दिले.

श्री गजानन प्रसन्न.

103

२ / [illegible]

३ / नादरमं मुदके ॥

४ / लदाकी तदानी ॥

५ / आडा अंडान ॥

/ ६ आवनकी सांजमोपे ॥

/ ७ फागुनमासहु ॥

/ ८ मुखकर उमदीग ॥

/ ९ याही पे रहोल ॥

/ १० सजे यालपर ॥

/ ११ मोरे डेरे आवोजी ॥

/ १२ जोबना देखलैया ॥

/ १३ मोहे केत रसवातियां।

/ १४ [illegible]जी रैनके ॥

/ १५ मलकोउकरोरीयेन

१६ आज रंग है

१७ मोरे कानभनकवार

१८ ममनमीया दमगेनी

१९ जमयतकी जो मोरी।

२० चलर सुजाना

२१ आज भनंद मुख

२२ अर सबे दजुग

ललबे ललधन।

फूलबन बेज

२४ तेनन तनदेरना ॥

२५ पावसकल ॥

२७ कासकुवरवा ॥

२८ गरजत आये ॥

[illegible] आदर समधान।

[illegible] आलो व. जये।

[illegible] रे बीजु ॥

३३ तानरेन दानी जे।

३४ रैन दी बाके मे। रंबा

३५ आवमानं [illegible] भूपाली

३६ उरमव दीवो। जौनी

३७ आहोकैसेडान पुनी।

३८ दीमदा दादिरदिर भूपाली

३९ दैयानीमे कैसे के हेम।

४० मातीमालनो कामोद

४१ जोबन गरब केदारनाट

४२ कैसे कैसे केदारनाट

४३ चलीबूमनालत पूर्वी

४४ चराचजना रवटे

४५ बिदादार रवट

/ ४६ ठुमकननजहुम। देवी

४७ एबदरा उमंड नायकी मंल्हार

४८ नायकी मगवारननार

४९ फुलवारीली फुकी मावरे

५० अबयाहु जलबरेत बैसावबहार

५१ कौनगत भई ली। बागेश्री

५२ एडालरीयावैरवबहार

५३ मुखमोरमोर मालकौस

५४ लुमहामरसन भूपाली

५५ धाजगरीधानराल। जा। केदा।

५६ धूममची अजिये भैरव

५७ भैरवी – आयो फागुनमा

५८ मार्वा – धमधा गमधम।

५९ जेजेवंती – मगरे मनिमार

६० सुहाकानडा। – मगमा[illegible]

६१ वृन्दावनी सारंग – डरी ये ना मानव

६२ " – राजनके बीज

३१८

(३)

(2)

...मल्हार

३३८ राग मल्हार ताल तेताला १२४

गरज गरज घन बरसे बदरा रहे काऽऽरे ऽ उ...

ऽ राबे अंधेयारी कारी कारी माऽ झमझूम ॥

चमके चमके चौंके बीजलीयां गरजगरजे ग...

गगनवा चलत पुरवाई मा झमझूम ॥

राग मेघ ताल सदरा

उमडु घन घुमंड

ओ

③

(2)

श्रीः

श्रीगणेशायनमः श्रीसरस्वत्यैनमः

रागयमन

१

येरी लाल मिले री आनुप सुंदर राजेंद्र राजा राजगन बल येरी लाल मीले ॥ जोजाकी भावर खोवाकीत र अत करो रीमन लाल मीले ॥१॥

२

कोयलिया बोली रे पीहुं कवन देस रहि लाल्यारे ॥ दुष्ट पड़ी जबले लालनी उनाबिन रहीला नजाय ॥१॥

३

येरी जोगी का के हो वारी वारी वार डारी वाकी सुंदर जपमाला पर बल बल हारी येरी जोगी ॥

४

दिये रामै बारौंगी चिया के हजरत ख्वाजा खिदर की नजर दीये रामै ॥ दूल पूल और अनधन लछमी निसदिन सांज फेजर ॥१॥

५

पट तोरे कवन देहौं तोरा जुं सुर ग्यान मों मद खायेचतुर बालमवा पट तोरे ॥ हो री जीतो का भईल बा सदारंग री देहे आलमवा पट तोरे ॥१॥

लाना दिर दिर तदा धनरे तदरे तदानी अ त नद
नों तनन्द्रेतान तारे तारे तदरे तदरे ली ली ली ली
लाना दिर दिर तदे दानी ओम तना दीम तना.

तदारे तदरे दानी गम तनतों।

धेति ले ते कीन धेत ले ते कीना दिय + ना दे दिया ना
ता रे दानी दीतोम तननन दितोम तननन
धी धीना धुम किट तक तक धिलांग धुम किट तक
धिलांग धिय तक तिर किट तक धा गा लनोंग

निरे गम गरे निरे तेलाना.
ओदनान लेले लान दैरे तेरे नों दीं ना दीऽ नाऽ
नै दैरे ना नोंऽ दीर दिर तदाऽनी दानी दानी
नै दादानी लोंऽ तानै दैरे नाऽ नाऽ नै दैरे
नोऽऽ दींऽ लाऽ नै ॥ तेले कोना दीं ला दीऽ दीं
धुमता तिलि
दादानी ला तिले ला दे ना लाऽ दी य र ना दीऽ ला
लाना ने दे रे नोऽऽ दींऽ लाऽ नै

नेवरबाजूरे बाजूरे ले हारे पेरनको
सर्व न सुनत नहीं अब तुमकाहे दुरावत हो
प्यारे ॥ नेवर ॥

सुनत स्यान आगे पार परोसन और नगरके
सबही लोगवा देख सौतन प्यारीको
सदारंग मौमदसा राजू ॥ १॥

राग तिलककामोद चौ. १

९ तालसूलफाक्ता

चंद्रबदन मृगानैनी जोबन मदमाती च्याल चलत
आपनी जोबन के गर्ब ॥ लचकत कर च्याल चलत
छिछिकत कपोल लोचनवारु याछबपर
अर्ब खर्ब ॥ १॥

इ.ता.ला. ख्यॉन.तौ.

१०

हरबिननायक लंबोधरो छत्र गोपियानगावो
बजावो बिरजमे ॥ ऐसो ही गावे तान सुनावे
नंदछेल गीत छंद डेहेरु धरूपत नीके
गायसुनाये गुनियनमे ॥ हरबिन. ॥

११ अपताला भा.पैकी

सुदबिसरगई आज अपने गुनकीं जो चायेले पाय अपने गुनकी ॥ १
माउं मैं देया छबनु जागे अखलर पीर फकीर सबगुनी सबगुनी ॥ २॥

१२ झंकार ख्यॉन.तौ

एकताल जागोनिस्वारानी ॥ अंजलनपाक आजदेह माममैं ॥
खलपेरी लाज ॥ ३॥

२

॥ श्री ॥

॥ रागभूप ॥

१३

सूधे बोलत नाही कामिन रूप की मारो रे ॥ सूधे करर ही मान मान प्यारी कीने ऊलन करो रे ॥ ९॥

१४

ओदानी दानी तदानी दीम तननन दे रे दरनातदारे दानी उदानी दानी तदानी तदीम तामरे दीम तन न तारे दानी ॥ धुन

१५

आज मोरे आई आई ला साजन आनंद मिल गावोरी मौंगलरा ॥

१६

जबही जनम जानम जानौं गी जब मिल जब मील. गो मोहे प्यारो पे री जब हो जानम ॥ जानम दीत लपजा नो हीं गी जब जब जब भर दे क्यो उने न नेनम जब ॥

१७

एक छब सांवरिया की मोरे मति भइ सवरीयां दे यां मोर मुकुट पिताबर सोहे कुंडल अलकन कान की मोरे मति भइ सवरिया दे यां ॥ १॥

(8)

॥ रागब्याहाग ॥ ९९

कैसे सुख सोवे नींदरी या शाम मूरत चित चढी कैसे ॥ सोच सोच सदारंग उकला वत या भेदन आन बडी कैसे ॥१॥

मेरो मन आटको आली वा मूरत को ध्यान मेरो निस वासर भई योही बीतत है निकसन लागे प्रान मेरो ॥१॥

कवन ढंग तोरा सजनीरी जुलोइत रात उत रात बीती जात कवन ॥ धांडमे हेरत तोरी बलालो सोत लगा रही घात ॥ कवन

दया बजीबा बात भईरी सुरजन भैका आपी बनाये लयी रे ॥ अत सुख पाइला मो मन जबते तबते गइला दैया ॥१॥

मा० १६

बालम रे मोरे मन कों चित ले हो बन दे रे मीत पियरवा बालम रे ॥ सदारंग दिन जावो बाद सवा सुख नींदरी या सोवन दे रे बालम रे ॥१॥

॥ श्री ॥

॥ श्री ॥

छायानाट. धीमा [illegible]

23

करत हो मोसो नेहा की झूटी झूटी बतियां बनाये ॥
॥ एक हम हूं श्याम तुम हूं जानत सब अंग जानत
हिये रखो हीये रामिलाये करत ॥ १॥

24

कैसे कैसे समझावु होली ना बोलो तो जीये रा
नाही मान ॥

25

ये री आन गुंदला मालनिया इसबनरे के सीस
सेहरा ॥ लागि लगन सुलतान सालम सो
बनरा बनी सो लोग नेहा ॥ १॥

॥ श्री ॥

हमीर

ये सुरजा यरही

गुडझउ[illegible]जी प्रेम कोरे मुंद मुंद मुसकाय रही रे [illegible]

नटजेजवंती

पियसंग जान लीनी र दोरिवलह री [illegible]

धीर कंगरवाके से धर जानु सुन पाव मा ते

सासननदिया कैसे ॥ हलवो पुन धट व [illegible]

कोन बहाने [illegible] देरी [illegible]

गगनी गो [illegible] ॥१॥

हमीर चीज खाँ न. पै- एकताला.

मेंडेरे यार हांऽ मीऽ वेऽऽ लपदी सी कैदाँ जिमेना मानी

तेंडेरे कारन मेडेरे ॥ कमली रमवी फिर दी संहाऽ रंग

जुहिना मी वाऽमेनू तेंडेरे कारनु मेडेरे ॥१॥

॥ तराना ॥ ३० ६

ओ दा त न दे रे ना दीम त न रे दानी त दे दानी दीम त न दि
दि र तों त न न दे रे त न दे रे ता न दे रे त दे दानी ओ ते ॥
ओ दानी त दानी त न दे रे ना दीम ता न दे रे ना त न दे रे ना
त दे दानी त दे दानी ना दे रे त दे रे तोम त न न दे रे त न दे रे
ता न दे रे त दे दानी ओ ते ॥१॥

होरी ब्याहुला ॥ ३१ ७

पिया होरी अब के खेलोंगी खेलन वा मोपे लक
लकमारे गेंदुवा ॥

३२

ये लाडगहेली बनरी री तेरा बर ब्याहन आया ॥
हिरा मोतियन को सीस बसे हेरा बिराजे और बागा सोहे
मेंदुरी ॥१॥

३३ ८

परिहे पान आय रे मोरे नाजनगा पिया मुजसे अडा कि
रैन जगाले ॥ निसदिन जागे ली तोरे हमा हो से प्यारे
मोरे लौंगी ब लैरां ग र वा लगीले ॥

३४ १०

लंगर धीट मगमग मगरी कै बर आंओंई बसडनी या
ब्रिज में पानियां भरन का गर आंजात ॥
हु लो लोडन नम री आके हु ब लो धांड त बान न
सेब र सर्न हु को दो टा नि के डा मा मो हे दू बर अ यो
बा स बा न बो जे ले गयो जे कहे पा कि [illegible] का ॥१॥

३५
अब हाला [illegible]

॥ श्री ॥

रागकेदारी

३७

अखे हो धूल बल नटनागर हे हो नट नागर ॥

मूरली अधर धर अधके

बिराजत मोरे मूगुट कुंधसागर ॥ १ ॥

३८

जोगीरावल बिलमरहे निसदिन संग अबमन भूलभटके येमाजो ॥

मौंदर बाजो रे अरे बाजो रे दिन सबामिलगाणे येसहेलरीया ॥

३९

कंसनामोराअलहि आमोके मीनिकरीये माबिकोलभाअबमें केकोगरबाजाउरे ॥ जोलदेहूंगा बिमनमामेहूं नामतोमी कौंगं तेरा नाम रे कगन हेगा ॥

४०

हुसेनी कौकी अब कबिलाके दसलमें आया
शीतं मानोके हातोंने नेहामन दंसे दुख पाया
न खाना खाने पायें और ना पानी तीन दीन पाया
हुसेनी ने अलीने उस घडी तीनोके फरमाया
हाम इस ... ने दाना औ पानी खुदा देने
खबर नाना महंमद लेवें या मुश्कील कुना लेवे

~~कमल कुरकुधरे~~

13

४१

॥ कुसरकुधरच्या दूर बैया कुबतहो बकंमा
बोतनबकीकडकाजोने ईतनी रवाके गंधा ॥

४२

कमतो महात्मा जनप्रवीनं सब बीच ज्ञानता हो

१

॥ रागखंबवा ॥ १ झुमरा.

२३

आद महादेव बीन बजाइ पाई न्यामत खान पीया सदारंग करम दिखाई ॥

समसुरन सुरसुर की समझ करे मनरोग अनेक ध्यान कोट लागे सब गुनी यन को ये समुझाई ॥ १॥

२४

माथे तिलक धरे बैरागी बैठा हां बैठे रहे जोगी काहा के मिया ॥ २॥

२५

सोजाने जीजाने बालमुवा. मोरी तेहारी पीत के बचनवा. ॥ बिगर बनावत बनन ही आवत. ऐसो है बे तेहारे. लछनवा. सोजाने री ॥

२६

झुमाकनीयां बाजूबन्दाइ झनानाइ नाकद ॥

काहेर को परन अरवीयां गुमानी सदारंग दीनो ॥ ४॥

१

अनकहाइ कहो जो बताये अरस्पर स्वर सगरना रहा है ॥

२७

शंकरा. गु. स. पै. जती.

पीहर. वाऽऽऽऽऽऽ ऽऽऽऽ मैकै रऽर आ, गे ऽऽऽऽऽऽ९ऽऽऽऽऽऽ

स ग ग प — स स स रे स स

लागो जिन मुसोऽऽऽऽऽऽ पी ॥ तेरो रंग ढंग सब

कोइ जाने मौं मद-साऽऽऽ जो नाकै बोकी सोऽसोऽऽऽ

स पग प ग प ग रे सस स ग प स प ग ग प ग रे स

कानड़ा

८६

जै सो मोरा जी तुं म्ही सन क्या है मोरे बलमा जै से मैका
पा हो राज रहसे रहस गरवा लगा ये ॥ पाधी की प्रीत की
औ र बिभाई दुरजन कुल घाता है नाई मोमन इछा बुझाई
बाह गयी तुम्हारी पलगावो ॥ १॥

८८

आ ला साई सब जान दानाकबके जानि ध्यान तन से ॥
करकक नाकेगना ने हाबरसे आनत पास पीरन दे
जिये ना तरसे ॥ १॥

९०

मूंदरी मोरी काहि को छीन लयी छेलवा कारे करन मैलो
रादे ॥ हुलोन हीरतरात रंगीले मानका हा अब
मोरा रे मुंदरी

९१

मालनिया बंधनवा बांधो रे बांधो बांधो खूब मि
लके मालनियां ॥ मंमद रसा प्यारे के घरका जो बंधन
॥ सदा रंगीली लाल ने सो बधवा मारी ॥ बो
तु बना है बना बंधनवा ॥ १॥

९२

छेल देवु छेल छबीली चरच्या करैं गी सब
घर को मोरी का हा कीनवा ॥ औ र के दीये से
क्या पावोगे जो हमरा तुमने लीनवा ॥ १॥

९३

पीहरवा छोरि ... आमन ...

दुलहान लेरी

राग दरबारी

ओ दलमन दीम [illegible] पट है रहा तन न दे रे ना त छु रे दामी
ना द्रे [illegible] लोग तुं द्रे द्रे धे त लोग तुं द्रे द्रे दामी
[illegible] ना दिर दिर दीम त नन दीम दीम
त न न त न दे रे ना नां द्रे तुं द्रे धे त लोंग त ने न
धे लु लोंग त न न त धे त लोंग त [illegible] नी आआ

५५

इन न के इन न न [illegible] मा री ला ज से कै से कर
अब धुं दु रु न नो लेंग [illegible] ग नि स आ दि कोरी
या री का री बिज री चमके सो हो रे या
ग र ज ग र ज ग र ज ॥

५६

कानन सुनायी ये बात मोरे जियाकी कान ॥
ऐंडी हैंडी डोरे ले आयी सबन को बात
करत मोरे जियाकी ॥

५७

आरी येरी मोको जब लग चैन जब लग
मोंमद सा घर नित घर लागी रहो ॥
दरबारे दरबारे

५८

धमार
आवो श्रीजि राज होरी खेलो विलावो लाम रे है
मेरी लाज आयो ॥ दुख आवीवि समान ओ दाव
सुखको रंग बरसावो ॥१॥ (भोग)
पीत गुलाल रोल ओर डारो जासे कुमल मे [illegible] जादु
भजे सेवकके प्रभू कुंजबेहारी. पुरन होवे सब
मनके काज श्रीजि राज. ॥२॥
हाडारतलोरे ॥ ५९

ये सुनके हलधर [illegible] आये देखीराा
उ[illegible]लरो [illegible] [illegible] [illegible]
धर [illegible] मैबड़ो [illegible]
[illegible] ही हात [illegible] आड़े आड़े
[illegible] [illegible] आये
॥१॥ श्याम ही [illegible] मोहे [illegible]
निकसत सगुन. अहे न ही पायो मेरे प्रान
जीवन धन. कान्हा लिनके भुज मोहे
बांध दिखाये ॥२॥ मात [illegible] [illegible]
यी [illegible] नामसुनाये. सूरदास लव
कहुं [illegible] दोधयो तुम एक है यी
आये ॥३॥

ख्याल. कानड़ा. ११

ये तुव सो है करीम राहिम करीम पाक परवरदीगार दिगार पाक परव
र दिगार गरबी को गरब दूर कर आरत है छिन मे दुखियां को मौर
ाता. ये. जो मोमन की इछा सो पुज हो सार सदारंग को दीजो
ी न छुनी मे ज्या बाता है तव सो.

ख्याल. आड़ा चौताल. १२

नबंधर सुखसी धुह पाकर कारनीक रघुराइ॥ सुन हे नाथ मन
त लिनिविधाजर करत फिरत बीरारक [illegible] देखजगं धनमस
[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] धर्म [illegible]
दाइ तुलसिदास भवरोगराम पद [illegible]
[illegible]

17

गूंदला मालन फूलोंदा सेहेरा। आज बनाबंन
री ओमुबारके ॥ नूरको उबटना अंगलग
यो फूली सदिदार नबीजीने पायो सेहेर
सबना आंग सुहायो ॥ गूंदला ॥

६५ स्थॉन. पे.

तूहै मंमद सा दरबार नजामुदीन सुजारी ॥

धोले कलस पर बुलबुल जैसे तुमपर जी है
कुरबान नजामुदीन सुजारी ॥१॥
जोहि जोही धावे सोही फल पावे सदारंग तेरोही गुन
गावे नजामुद्दीन सुजारी ॥२॥

ताल झपा

६६

देखो सखि आज रघुनाथ सोभाबनी ॥ नीरनिरद
श्याम बपुरू युव जोबन प्रीत आंबर धवन
हरन दुख दामिनी ॥१॥ सरजुमजन किये
अंग सज्जन लियें देखते जनहियें रूपाको
मुकुट मणी ॥२॥ ... मंच गजपर
भुवन श्रीपति ~~बनि~~ रघुपति वदन कुबेर
की सत्य धनी ॥३॥

६७

~~तिताल~~ ताल एक्का

ओदन दीं तनों देरेना तदियारे तदारे दीं तन देरेना
तदारे तनों तन तदारे दा नी दीं ॥ उदतन
देरेना तनदेरेना तदियारे तदानी तना देरेना
तना देरेना दीं देरेना तदियारे तदानी
दीं तनदेरेना तदारे तनों तन तदारे दानी

राग बागेस्री

गोरे मुखपर तिल काले नीके मोंने मनमे के
इन नैनन के फंदे फंदा रे गोरे गाल फूले
और बिंदी रसीले और मोतिनकी माल पहेरे ।।

मन की मन मे रही कान सखी पीया सो जियाकी
बात ।। मनकी ।।

बंकीया रूबेली मिया सोमा हि शेरा लाडे वे आवो आवो
।। लुहि की य तू हि टीम तु एकसवार जवा हूँ तू हि गरीबकी
पालनवाला गोरा ।।

पीया पिया की

राग दरबारी त्रिवट

दानव बतरंग दलका जैसे चौंद्रिकाजबहि
कोपिल खडग हिंगाचढ़ चलत धावे ।।

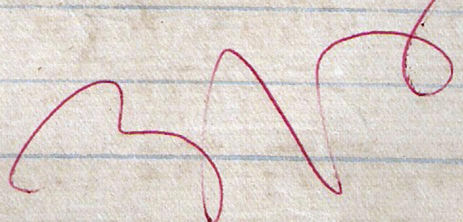
सासासा गाऽ मप धधपम गरेसा नीध नीध पऽमऽ
गऽरेऽ साऽ गगरेसानिध नि धपमगरेसा सासा रे रे
गग मम पप धध नीनी ध धपपमम गगरे रे सासा.
गाऽगा नादिर दीं तदीं तदारे दानी द्रियानतो
द्रियानारे तदारे तदारे नादिरदिर तुंदिर दिर
दिर दिर तियैन तियैय तकधिलांग तकधा ३ तका.
धाकिर तक धुमकिर तक. तिटकिट दित्ता किट तक
गदिगिनधा. धाकडान् कानतिरकिट तक तकानन तकान
खिनखिन तकत्रन तकत्रन. खिनखिन. थुंग थुंग तक
तकिट धाट किड नग धेधा. नवलकिशोर तिया
आनंद सुखमन बांधिल तोरा मुजस गाईये ।।

कौन फंदे मोहिया री ।।

कोन गत भइरी मेरी पियानपुंछे बात ।।

७५ हिंडोल. तिताला.

द्रे द्रे द्रे द्रे तननन देरे नातदरे दानी द्रे द्रे दानी
तद्रे दानी द्रे दा नी द्रे दानी दानी. तदे दानी
रे दानिल द्रे द्रे द्रे द्रे तननन. तदाऽरे नीताऽरे
तनाऽरे तद्रे दानी ।। नादिर दिर दिर दिर
तननननन. धाकिटतक धिरकिटतक
नकधिरकिर तिरकिटतक. तननननन.
दिर दिर दिर ~~दिर~~ तनन. दूतनदूतनन तदरे तदरे
तदे दानी. तद्रे दानी धाकिटतक धुमाकिटतक
गीगिनगधा गदिगनधा.
दिर दिर दिर दिर धा नादिर दिर दिर धा
तक धान धिड़नक तिरकिट ~~तक~~ नकिरकिर
तकधा नकिर किटतकधा नकिरकिटतकधा
।।१।।



ये बीं मा पी रंग खेले बन बन फाग कर बसंत ॥ सावरी गोरी बोंबी ले गुलाल ले सहे अडाना पर वारं बा हवा हवा हल हसोंग.

तिलक वाड़ा.

ता न न गायें बजायें गत भेद. ताक परन बनाये नीके समसो ॥ बीन र बाब मिरदौंग सौंग लि गावत गुनी आये सौंगत सो

धान गरो सुभ आज महल सबमिल गावो बधावन बसो पकी मुबारक को ... जी वेह जागा ...
सदा रोंग मो मह रसा गुनि जन के गुन ...

चौकता देस

लाल डिगन रहो

भटियार ख्या. मै. पे.

२

आज बनी रंग लागा रे बनरे आज बनी ग॥ निंद्र का माता पलक नाही खोले सोने सेने हरस पागा रे बनरे ॥ आज॥

कामोद ख्याल डो. पे.

३॥

हूं तो जनम मन छांडे ये निसदिन हमे पिया को साग॥ बंध नापे मैं ये मागत हूं मेरे प्यारे को कि जीये क आग॥१॥

४

४ ख्याल डो. पे.

जाने न देंगी री माइ अपने बालम को नैनन मे कर राखों पलखन कं दं मुंद करे॥ जब आवेंगे लालाहि आपहि मोर मद कर लेहो बलैयां झुम झुम करे॥१॥

५ अस्ता॰ पो॰ पैकी

जियो मेरा लाल बनवा मेरा अब सोही कंगनावे मा॥
सब सुने दाबना वो देवा बिराजे और सोहे मोतियन का माला ही

लारेहो लागो है आवे आव धनी राजेंद्र
राज पाधे की प्रीत उन लावे ॥
नंद रो धीट बड़े छोन ही माने नेनन ने
सेन मिलावे ॥

ठुमरी - एकता

पिया कर धर देखो धरकत है मोरी
छतियां कैसो ही रतियां कारी भारी
अतहि डरावत ~~रातन~~ मैं गै लीनी ॥
(अतहि अचानक)
तुम जो सरस रसियां आपने रत के
गाहक ओलो काहू कि एक ना मानी
पिया आ पैसुनत मोरी निकसत बतियां ॥
॥१॥

30 I

राग मालकौंस

पीरनजानी रे बलमा देखी ते हारी आलीमोरी मीरीत ॥ उहाम तेजावंद बधी अनात बिलमर रहे कोन गावकी रीत ॥१॥

८८

X आज मोरे आयी को सोमत प्यारे करूंगी आदारंग रसकी बतियां ॥ अतर अरगजा सुगंध बेल हन फुल हन सेज बिछा दीयूं चुनचुन कलियां।

आडाचौताला

९०

ये हो गडा आब के बैरते मयिकको बक्सो ॥ कनदु धनो ख्याल देनो सदारंग मुनो तकशीर निक दुमडउ दमाजाबो बोलत रखे सो बक्सो ॥१॥

आडाचौताला

९१

फगाजागनदेहो राजकुंवरको ॥ सदारंगीलो पि उडपायनद रो ॥१॥

९२ मालकोंस तालझपताला

सा ऽऽऽऽऽऽऽ सुंदर बदनके ॥ मैं ऽऽ दन दी प ऽऽऽ न मनरीं ग ऽऽऽ

का ऽऽऽऽऽऽ रे जा ऽऽ त ऽ छी पे ऽऽ रे ऽऽऽऽ ॥ध॥ नीक सोक सुं ऽऽ

सरेसनीधमग मनीध सां

ना ऽऽऽ कहे ऽऽऽ जो ऽऽऽऽ जन ॥ इश्रादी ऽऽऽऽ म मु ऽऽऽ ख ऽऽ

दी ऽऽ छके ऽऽ रे ऽऽऽऽऽ ॥ सा ॥३॥

मायी सजन ना आये सोई डरा ॥ कु॥ कोन सुने कासे कहुं आली रस बातीयां ॥१॥

पूरिया (तराणा)

तीं तननन नततत देरेना तन देरेना तनतादेरे देरे तनन नीत तमतितननदेरेनाऽ तननन देरेना देरेतादीं। तनाऽ दींदीं तनन तादीं दीं दीं तनना दींतननन दींतननन नन दीं दींतनन तादीं दीं तनन दींदीं ननननदेरेनादेरेना देरेनादीं तना दींदीं तनन द्रुद्रुद्रुद्रुतानी॥

आद्रुद्रु धितिलानादींतननन दीं तननन नितनम नितनन नितारे तन नितारे तन नाद्रुद्रुतुं द्रुद्रु धितलां तुं द्रुद्रु धि नलां तुंद्रु धितलां तुंद्रुद्रु द्रुद्रुद्रुद्रु [illegible]॥

~~[illegible] द्रुतपद का ख्याल~~

~~तुजो माल गमी तुम्हनमोबी बिघाश्वर बाही बैके उभवा~~ ~~नी॥ तुहियुफत तुहिप्रगट तुहीं पके थाके से सकळडाग~~ ~~मानी तुआदभवानी तुजो॥२॥~~

कोन गत भई वि

25

राग सोरट ध्रुपद

नैनन चलत गुजरी उत्तर गात भवयें कहत मन कसोजात नैनन चावत ॥ हरे लेंगो केसरे रंगी आंगीया सु यी साडी मन सुखरत सुहावे नैनन चावत ॥

॥ देसकार ॥ तीकवाडा १

हुंचो के कारन आ॥ग॥की आइका गइकामोरी ॥
कुमीरनकर॥॥ रही जखी पनमे, दीवागरहीं चौं ओर ॥

॥ २ ॥

जागो जा ॥ गजोनेदी भो, रे कहत कहत सुनत सुनत दुबरकी रतनारीयां ॥

बेस बेसन बैठे न्यारे हुं कीरबैठे भुजनसो वृज मीकान छतियनसो छतीया ॥ ॥

८८ तोडी आडाचौताल

१००

ज्याऽ ज्याऽऽऽ रेऽऽ पतगऽ वाऽ मोरे पिया कहीदेऽ होऽऽऽ

पतीयाऽ रेऽ ॥

तुमरुनसन कहीयो तुमराखोधाय तुमबिन
गग मम धध सासासा धध नी सारे गगरे सानीधप

सदांरोग अब सरी जात छतीयांऽऽ ऽऽऽऽऽऽ रे
रेग रे रे सासा सरे रे स रे रे नीध पधनीसासाप

हमीर चौताल तराणा

१०१

दिं दारा दिरदिर तेकेधाना तननीतन ततनना तनतन

दे दाऽ नी तदियनरे नदीयनारे नीतारदानी

नद्रे दानी तदानी तदानी ओदानी तदानी

तदानी तोंऽऽम् तनन तोंऽऽम् तनन तोंऽऽम् तन

न ॥ तके तेकाना तेकेलेकेकाना तेकेलेकेके

लेकेना नीतनीतानत नीतनना नादिर दिर देर्ना

त्रें दिर दिर देर्ना तननतन त्रेंदिरदिर देर्ना ॥ ३ वेळा

(२९)

१०२ मल्हार.

बेलरीयां फूलरही आमरैया मोरा यी
बार बार मलीयाले हो थाम थामं कीलीयाले.
लाल बैलेयाके रामबाहार आई ॥
डार डार और पात पात पर फिरत भवर
मंडराई आमरैया पर बैठ कोयलीया.
कूकतानबद सुनायी पीहू पीहू रटत पपैया.
चौओर मोर बुलायी आनमन भाई.
॥

खमाज १०३

ना दरे या दो दर दीम तानों दे रे ना तनन
नन ने ते नाना ना ना तुं दे नारे नारे
यलीयला लाले. ॥

गौड मल्हार एकताल
१०४

तन नादे दे दानि तों तन तदानि दो रदीं तन नन ननादीं त
नन नदरादरा नादेदे तनन यलियलललल ॥ बर्फ
झिम झिम तप कोयलेरा मेरसा सांके या स्यामान ता
गोकुलके बारामेरस ॥१॥

१०५ मि. मल्हार ताल ३
बिजलि चमके बरसे मेहरवा आइ बदरारियां गरज
गरज मैं आतड़ डरावे ॥ घन गरजे घन बिजलीज
के पापीयां पिहु की टेर सुनावे कहां कनु कितजाउं
रादजित रसे मैं ॥१॥

मिजा खांसाब नथन खाँ पैकी

(राग मुलतानी?) [illegible]

ढोलन मैं के घर आंवी सो ना भीया लो मे बतीले रे
सद के जावु ॥ मुखवे खां तो मै जिवा सदारंगीले
दरस जिन पावीं के ॥१॥

(राग सुर मल्हार) [illegible]

रुतबसंत मे आपनी उमंग सो पी ढुंडन हो
निकसी घर सो ॥ मिले लालन का
घर बिठला ऊ पाग बंधावो पिली रसरंग से

(राग भीम)

ये री मन विवके से के मिलना बने गो उन बिन
मोरा जि या बोराना ॥ जब से गये मोरी
सुद हु ना लीनी क्नि दुतियन बिरमायो

(राग बसंत) [illegible]

फगवा ब्रजदेखन को चलरी फगवे मे मिले
गे कुंवर कान जहां बोट लकत हो बोले
फगवा ॥ ॥ आयी री बसंत सबीबन फूले
रसिले लाल सो बोले फगुवा ॥१॥

द्रीं तनन दिर दिर तानों तदेनों तन
देरेना देरेना द्रीं द्रीं तत द्रीं तन देरेना
तदारे त द्रे द्रानी द्री तनननन दिर दिर दिर
दिर दिर द्रानी ॥ ना दिर दिर तनन तु दिर
दिर तनन तद्री त [illegible] न तनन तद्री

मल्हार ॥ २ ॥

२११

[illegible] ॥ [illegible] की का दीवा दरियाने केना
सुहावेना ॥ उमड घुमड घर आवे नणंद सर लगावे लर आवे सदा रंगीले
को [illegible] आवो मन के बीच [illegible] ॥ ३ ॥

२१२

कइ बार को बार [illegible] [illegible] [illegible]
ननन मेदे दे चुनरिया [illegible]

२१३

[illegible]

२१४

[illegible]

२१५

सुरंग चुनरी यादे हो रंग प्यारे मोरे बाल्मा मो को [illegible] ॥ याहो लालन
री सोगी दे है [illegible] गरनी को लगी ॥ ३ ॥

११५

पपी दादर बोलाई पपिया को सत
सब बसुनाई पिया की सुधाई
सुदगमाई ॥ चमक चमक बीजली
डराई याद पिया कि मोहे दीलाई
येनायक गरज गरज बरसो बादरवा
मोर बोलाई ॥ पप॥

११७

आ बको उ बरज्योना यहां कंगर काई उरज्यनकेक
ककै पायकमोरीबाजे छनन छनन ननननन ॥ आ॥
अपने गरज्यको अरज्यनमाने सौंमदना चोरकरन
तुर गईका धुंधर्वमोरा बाज्यन छनन छनन ननननन॥
को ॥

११८

बरसेऽऽऽ मेहरुवा बडी बडी बडी बडी बुंदन ॥ ब॥
चौ ओर बीजुरी चमुकेडर पावे नीयो बीनडीयरा
नरसे ।।।।।। ॥ बा॥

११९

पपैया बोल बोल मुनाको मुनाव हाम को अदेग॥
तन मन धन सब वारी देऊंगी पर जो पिया मोरे घर लावे

जौनबहार

120

पीड़ि पीर देस वा माइ के से क रख उ येअ

ब ध मार

सैमपगम धनीसानीप

मपगम मपधनीसधप

मप गऽम

121

हे माव र सन लाऽऽऽऽऊ मोरे बादरीया ए सावन
की कारी कल भारी ऊर भावन लाऽऽऽ गोड़ बरसन ला ध
च मक च मक बिजरी सो च मके पैरी ब बोयाऽ द है नु
ज्याके प्यारे चुक परी करजन लागी गयाऽ बरसन ॥

गौड़ 122

गरजत बरसत बीगत आइ री तुमारे मिलन को अपने प्रेम
पीहरवा बे लोगर वा को गोविंदा ॥



123 रागबहार

कलि नामकामतरु रामको दलनहार
दारिद्र दुकाल दुःख [illegible]खघोर धनधामको ॥
अं. ॥ नाम लेत दाहीनो होत मन नाम बिधाता
नामहे ॥

होरी

~~ज्याकी चपलाबोध तासोंकों बसाय~~
~~मधुकर माधो जी सिकयो जाय~~

तिताला 124

तुलीवाहु देसवाजा डामोरा कंयु लीनो तुध्या ॥ चलो
सखी मिलहेरी खेलो गारीदू गीनाही डरोंगी डफबजा
॥१॥

125

कलीयन रंगका के लंगर लियो भवर गुंजार
फूल फुलवारी चौ ओर पोर बौराई
कोयल की कूक [illegible] सुनी हूक उठी ॥

126

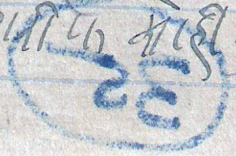
नथीं कलमये फूल नथी बेल बाहार

127 बहार दीपचंदी

ज्याकी चपलाबोध तासों कांहो बसाय # मधुकर मा
धो जी स्यकै यो ॥ गुरुचरनन पे ध्यान धारे ता सो कबुना
आपाया ॥१॥

128

महमद और बी यानबीरबने पगयो कर पदानी हो सका ॥ जिन पढे
कलमा वानी पर सोही मुसलमान जाको जानत होवे ग्यान ॥२॥



अदालत न हित न हैं मनरे.

60

तिलवाना 131

लाबे रो को ना खूब नाही हमसन गुमसन परे गे काम ॥ याद क रो गैली याद रा हो गे सदार गीले नाम ॥ १॥

बहार 132

खेल उलाल

हजरत ख्वाज संग खेलिये धमाल खेलिये धमाल खेलिये धमाल ॥ बाईस ख्वाजा मिल बन बन आ वा तामे हजरत रसूल साहेब जमाल ॥ १॥

चौताल इक्का 133

सुन तब न कुराले की धुन बाजरि ॥ पपियां गुंज त को पल गुजतु है और मोरन की गाजरि ॥

उलाल 134

भज रघुबिर शाम जुगल चरना ॥ इत है अजोध्या निरमल सरजु उत गोकुल सिलल जमुना ॥ १॥ इत कोसल्या माता गोद खिलावे उत जसो दाहलाव पालना ॥ २॥ इत बाहे पर सीता बिराजे उत राधा संग करे रमना ॥ ३॥ इत सागर पर सीला तरानी उतन ख पर गीरिधरना ॥ ४॥ इत लंकापत रावन माच्यो उत कौं सपछायो श्रीले लना ॥ ५॥ इत तुलसी त सूर बिराजे जुगल चरना चेत धरना ॥ ६॥

रागबसंत. ता. धे. ते. 9

१३५

बरजोनामाने आयी बरन को पलीया कूक बुलाई
ते सोही पपैया पीहं पीहं करे बर ॥ जबसे पिया
परदेस गइल बीतबे ते कछु ना सुहायरे ॥१॥

१३५

आयी रूत नवेलरीया सरस सुगंध लागी बीरहां
बहुत ॥ जो मोरे कंथ जारे पत गवा उन बिन
लागी बिरहां बहेत ॥१॥

तेताला मा. १६

१३६

गेली गैली एं जी एं जी डोरे सब नार गरवा
लागि रंग बरसा ऋतु बसंत माली जोबन
माति च्याल तोरी गेली ॥ सो के हु सींगार
कर अबरन पेहेर पेहेर पेहेर माला
अबिर गुलाल लियो भर जो री जे. ॥१॥

१३७

फगवा ब्रजदेखन को चलरी फगवे मे मिलेंगे
कुंवर कान जहां बाट तकत होंगे बोले कंगवा ॥

आयीरी बसंत सबीबन फूले रसीले लाल
सो के हु आगुवा ॥१॥

3 १३८

पिया संग खेलो री बरन बरन के बसन पेन फुल बान के हा
रवा गुंद गुंद डारि होगरूवा ॥ जै सोहिब संत उपजै
सब कु मन उलसा लिनो मनुवा अतई चाव पारे मे
राजा सरनामा ॥

37

॥ अत्ताई राग सोहनी ॥

प्यारा मेंडा नजर नहीं आवेंदा खड़ि पुकार पीपी पीपी पी ॥ तनबटी मन उमंग बनावु कैसे करतारवू गीजी जी ॥१॥

तराणा

दीम तनन दिर दिर तानों तदेर्ना तनदेरेना देरेना दीम दीम तन दीम तन देरेना तदारे तदे दानी ~~नादिर दिर तननन~~ दीम तननननन दिरदिर दिर दिर दिर दिर दानी ॥ नादिर दिर तननननत जु दिर दिर ततननेन तदीम तननननेन तदीम तनननन धुगुननगन तक तक तक. धिमा तिटकत गदिगीनधा तिटकत गदिगीनधा तिटकत गदिगीनधा ॥

१२३

६६

दानितनततन देरेना तारेदानी तदरे दानी दानीदानी
ओदानी तनितनन नन नन नन नन देरे ना तदानी
नादिर दिर दानी दिर तारे दानी तननन देरेना
तदरे दानी तदरे दानी तननना

६६

॥ राग कलत ॥

१२४

तूंहीमनसुमरनकरे निसदिन रट रट साहेनसाहेमादार ॥ होंतोसेवक बार बारकोजाचके तुमहो आलारोहाजूरी ॥

आभोग ॥ जोगुनिधावत सोफलपावत न्यामत देतसबनको पूरी ॥ तानसेन मीया येही स्तुतकरे रागतान संमपूरी ॥१॥

चि॰ म॰ प॰ त्रै॰ श्री
कलत॰ १२५

रैनका ऽ सपनाऽऽऽऽऽऽमेऽकाऽसेकहेऽऽऽऽऽरी

अंचा सोवत सोऽवत आखेव्वोऽ लीऽऽऽऽजबऽऽऽ

१ कोबूऽऽऽन पाऽयोऽ आपनाऽऽमेऽकाऽसे

१२६

क॥वाबेरक्कुयभुडवाकरके बैरीबुलगुरुदेजन सारी॥

१ मीराचामल्हार ॥ गरजगरजघनबरसे ॥ । १ मानी - धमधम मंध
२ रागसदर ॥ कहो काउकी ॥ । २ जेजेवंती - मगरे मानि
३ रागसदर ॥ आई समधनमोरी रे ॥ ।

६९

१ रागमेघमल्हार ॥ उमंड घनघुमंड बरसे ॥ ।
२ रागसदर ॥ पावनकुलकीशाम सहेली ॥ ।

३१८

१ सूरदासीमल्हार ॥ गरजलआवे ॥ ।

१ नायकी मल्हार ॥ एबदरा उमंड घुमंड ॥ ।

१ भीमपलासी ॥ नादसमुंद्रकोह माहा ॥ ।
२ रागसदर ॥ लदानि लदानी दीम ॥ ।

१ बिंद्राबनी सारंग ॥ आज अंजन दियो ॥ ।

१ कामोद ॥ सावनकी सांजमोपे ॥ ।
२ सदर ॥ फागुनमासहुलासबडोलक ॥ ।
३ सदर ॥ माती मालनी ॥ ।

१ मालकौंस ॥ याहीभेद होत ॥ ।
२ सदार ॥ लानदे रेना ॥
३ सदर ॥ मुखमोर मोर ॥ ।

बिभास. १. ६२

१४८

आज बधावों राज गौंद सालुरक बाजि रे
मंदिलरा बाजो ॥ समधन आई बनबान
आयी. झुरमट खेले पियासन पेस हेलरी.
आधीनी की साजन ~~थे~~ का घर बाजो रे ॥.

१५०

थोरे थोरे दीनन होस खीयो मिलन कु आये
बाजुरीया ॥ संग की सखी सब दूर निकस गयी
एक सावरी दूजे गोरीया. ॥

६२

इनके कार रहु ना जाए. गायकी

आइ काम इला — मो ऽऽऽऽ ऽऽ री ऽऽ ॥ध॥
मासा रे गपध

अं॰ सुमिरन करऽ प्रान हीऽ। आंखियन मोरी।
प प सासा सा सारधसासासा — सा ध प
जागरहीऽ। चौ ओ ऽऽऽऽऽ रेऽऽ
ग प धसो। ध प धसासाध पगरेसा रेसा

देसकार बिलवाल.

जागोजाऽऽ गो क्रि मोरी भोऽ रे कहेलकहेल
सधसासासासा

सुनत सुनत इबर ओर म बतियाऽ ॥ध॥
सासासा रे रे सा

बोऽस बोऽस बोऽठे न्यारे हं फि बैठे
ग ग ग प प सधसा। सधसा सा रे साधप

भुजनसो भुजामिलाहे। छतियनसो
गगग ग रे ग प ध सधसासा। प धधधध

बतियाऽऽऽ
पध ग प ग

43

गुरुवार

१८१

X० मीयाकामल्हार ता-तिला

गरज गरज धनबरके बादरा कारे काऽऽरे अजहिं इरावे अंधियारी कारी कारी माऽऽ झुम झूम ॥ गरज ॥ चमके चमके चमके बीजरीया गरज गरज गरजे मेघनवा चलत पुरवाई माऽऽ झुम झूम ॥ गरज ॥ १॥

(२). मेघराग ता-तिताला

१८२

X उमंड धन घुमंड बरसे बूंदनी चलत पुरवाई मा सननन ननन रस बुंदन बरसे मनवा लरजें झिंगवा बोले झौं झनन नन ननन रस ॥ उमंड ॥ चौं ओर धनघोर घोर कर धाया कारी आई बिजरी चमके आई थरहर कंपे मनवा करजें झिंगवा बोले झौं झनन नन नन रस ॥ १॥

(३). रागभीमपलास ता-तेताला

X १८३

नाद समुंद्र को है माहा कठण पार ना कोन करे याऽ को बिस्ताऽऽ र येऽऽऽऽऽ नारस ॥ नाद समुंद्र के तिर नऽको सुर मलीऽऽऽ करन बीस्ताऽ रऽ हीयाऽ मे दोऽ लोबाऽ धरेऽ औरे नबहुनापाऽऽ सौऽ है पाऽऽर येऽऽऽ दरस ॥ १॥

(४). रागदालबदर १८४

तदानि तदानीऽ दीम ओदतान नादेरेना देरेना देरेना तना नानानाना नादेरेना तादीमऽ तादीमऽ तान देरे नाऽऽत दरे दानी ॥ दीमऽ दीम तानानाना नादेरेना तदाऽरे दानी ओदानी तदानी देरे नाऽऽ तदरे दानी तकि धाकिट धुमकिट तक धिडान थुंगु किडता किडता किडतां किटधिन धाऽ ॥ १॥

२१

(५) ० लाल इना नाला

X आज अंजान दियो राऽ बिकाऽऽ नैन कोऽऽ
आऽज अंजन दीयो। हीन मृग हीन कुल लजात
कौंचन वेऽरव अदके ये चल निपट राऽम सुरव
देऽन कोऽ आज॥ ३॥

(६६) ० राग कामोद ९२८

X साऽऽऽऽऽऽऽ वन की सांजऽऽ मोपे ला दूऽबर
थई कीऽऽऽ बिरहा कठन मोपे दूऽबर थई की॥
॥३॥ (७०) कामोद होरी ९२८

X फागुन मास नहु जाऽ नऽऽऽ जोऽऽ कैक जोऽऽ सी धूऽम
उमंगी है माऽ उटी॥ होरी रचो ब्रीज बाऽल
गोऽपाऽल मुकाऽल उड़ जोऽ रंग बीऽर बोहीट
॥३॥ (८) राग ९२८

X सुखकर आऽऽऽऽ ई पियाकेऽ संऽऽऽऽ ग
दुरन दोरा ई आऽ ईऽ नऽव पूऽऽ ने अंग॥
टूटे बाऽल छूटेऽऽ सुरव पाऽ र राके है अंगिया
बिथुरी हैऽऽ मांऽऽऽऽ राऽ सुख॥३॥

(९) राग मालकौंस ९२८

X याही भेद होऽत सोऽव करदाऽऽ स भजान
हम ऽऽऽऽ की जोवा घट मे तांस तन मन साडेऽऽ

१४३

घुं म घनंनन घुं म घननन बिचवा बोले मोरी माई कब तुम जानो पी के अंगम भयो ॥ चार दिना ते आगम भयो इक बा मेरे लो जियाके सबी दुख काजो ॥ १॥

(१४) ल छमी टोडी. ति.ल. १४४

जोबं जाऽऽऽ रे ऽऽऽ ल ले या की मे रे कोऽ मन

धूऽ म के धाम ॥ बर जिन मानन
काउ की अनचपल भा मे जै से गाम ॥ १॥

(१५) १४५ रामकली कोमल गंधार से

बधाना गावों सखीमिल नर नारी इस
घर आज ॥ ब्याहान आया बनरा
रंगीला गावो बजावो रिझाव ॥ १॥

(१६) गुनकली १४६

मोहे लेत रसबतियां कर चातर
सुघर नार ॥

३०८

३८

अं॰) लाग लाऽग बजंद्र बाऽगा बकऽगु

धाऽऽऽ दुंऽ हा दोऽस सामीऽऽऽऽ बारबोध गणेश

नारद मुनीऽ सुरनलीऽ माहाऽ देऽव. इनसब

पायो नाम हरकीऽऽऽऽ पुजन कोऽऽऽऽऽऽऽ ॥१॥

(७०) रागचौता. ता तिलवाऽ. १५०

X सजौऽऽऽऽयाऽऽऽलें पर देस गवन कीऽनो

धरचाऽर काऽगऽजो नाही देऽत हैं ॥

होंजानु केकर रंग राती केकरे रंगमे मनुवा

भीऽजेऽऽ ॥२॥

(७१) राग देसी टोडी. तिताला. १५१

X म्हारे डेरे आवोजीऽऽ माहाराऽऽऽ जाऽऽजीऽथाऽ होता थाकीऽऽ टेर करे थाऽजी थाऽ॥ आगली थाऽत, तुम हम सेनाऽऽ करोऽ सदारंग कडी कडीऽ बीन बजावते जी थाऽ म्हारे डेरे ॥१॥

(७२) राग अहीरी टोडी १५२

X बीऽरदीऽ आवीर ग्वालनिया मा आजीनी

X सपनेमें वो आये मेरे ॥ नींद उधर गई उधार गई आंख बाई मोरी रे ॥१॥ क्वाऽरह सन वो बीरवी आली री ॥१॥

(१७) ... १५८

ए मा कर्जी रैन के उनींदे नैन मा ते
॥ मैंमद सा पिया चतर बालमवा
कोई सावनी रस पागे हो ॥१॥

(१८) रामकली दानीवर्ज
१५९

ताऽ न दे रे तद्रे ना धेतते लाना
लौं तन तान दे रे तद्रेन्ना द्रेना द्रेना
तान दे रे ना ॥
अलीयलली यला लाले यलयलों
यलयलों यलयलों यलली यला लाले
॥१॥

(१९) रामकली १५८

मत काउ करो री टोना सेर प्यारे राज
दुलारे बने को ॥ बनरी के रंग ढंग

मानो रंगरलियां ~~॥१॥~~ बाली बाला सना
॥१॥ (२०) ॥ रामकली टप्पा ॥ १६०

हाव हुज किनी ये नोरी बनाई ऐस
थोले थालेनु ॥ पलकां दे ओले खोले
घुघलुक देंदा नैंना दीकरदा ओर
पाई ॥१॥

३१७

१७१

आज रंग है एमा रंग है री अनें है बधावना इस घर ॥ निजाम दीन औलीयां जग उजीयारा मो मांगे पर संग हैं एमा रंग है री ॥३॥

(२२) रागजिलफ १७२

मोरे कान भनकवारे पाइलो सदारंग कब घर आवे कालन मोरे मंदर वारे ॥ तनमन नोछावर करेहुं सदारंग रतन जरत वारे ॥३॥

(२३) रागपुरीया १७३

समजामियां दम गेनी मञ्जन इसेनी जो गुजरे दिलबर दे संग ॥ लखजिंद सदके कीती सुनवे तै कइनदे सुक पंदी नो करतुसीये तैंग ॥३॥

(२४) रागपुरीया १७४

मेंहीदाड रंग बूडा चुडा अलबा कीला मोली नाले गुंथाइया मेंडी यानीवें निगोडी दुवे ॥ बके संयो मोतियन को संविस सो है चंद्र दया मुख पर केशनिकों लगाये नी बालम दा बाका जोडा ॥३॥

१७५ रागजलधरकेदारा तिलवाडा

धनधरी धनराज री माई धनसोहागकीडवीऽऽऽऽ माई ॥ मौमद सामिया ब्याहान आया और रंगीला सब सालरी माई ॥१

जयजयवंती १०४

दरदर ननननननननननननननन नीतानदरेना नदारे नारेदानी. तों ननननन. दीतदारेदानी नदारे दानी. नदारे. नदारे. नदारदानी ॥
धुमकीटतक धीडनेधा धींना धधाकीटत कडानकीडतक धुमकीडतक कडानकीडतक धा धींना धाधाधाधा कीटतक ॥१॥ १९

अलधारके दारा १०७

तन मन धन सबुन परवारूं जो घर आवेंगी ए जी बलमा मोरा ॥ घर आंगना मोहे दूबर भइला अब काहीं कि जियो कौन जतन गहो ॥
तनमनधन

नायकी मल्हार तिलवाडा
ख्याल १०८

एबदरा उमंड घुमंड आयेऽऽऽ ख जा रे नाहरे ॥
एक तो अंधीयारी काली दुजे दामनी मैं कौंदत है
गरज गारज अलहि सुहाये ॥१॥

नायकी कानडा १०९

मगवा न नवार पिहरवारे ॥ अनंद भइला सुख जियो रारे ॥१॥

बिलासखानी तोडी तिलवाडा ११०

नीकी घुंगरिया ठुमकत चाल चलत हैं ॥

(१२)

राग तोडी. १६१

बाबु मे तुरकन भयी हुं ।। बारा बरस मे न्हायी गंगा पे कलम बेच्यावो सुनाति मे बांगरी ।। १ ।।

तेतो सुर साद की बजायी ये बीन ।।

१६२

तेके ताना तो तन द्रितान तन तदरे दानी ताना तुंद्रे तदारे तदीम तान देरे तदरे तदरे तारे दानी दानी तेले ताना ।। नादिर दिर दीम तनन दीम तन दिर दिर दानी. तदी तान देरे ना तन देरे धेतत्रा. तनन दिर दीर. तदारे तारे दानी तेले. ।।

बीन बाजावबमायोरी १६३

आवरो बाबू काहां रहरवा ।। १ ।।

तिलावल १६४

पतिया पतगवा मोरे पीया सन मोया संदेसा. बेग कीयां ।। धरिधरि पल पल छिन छिन मैका जुगल बितातहै बेग दोलिया शिरी ।।

श्रीतोरख ।। १ ।।

आरी बीर हर बीछरन दुख पायो ॥धुं०॥ पातेया ना भेजी खबर ना पठायी मोरी आली मिलबेकी अब दा कहीरी ॥१५

१८९

मोरकायी मिलन भयी लवा मोरी मापीतम ढगवारे मंदरवा बाजे मंदिलरा ॥धुं०५ आवो गावो नाचो सब सखी सहेली सदारंग घर अनंद बतावो स॥१५

१९०

नवरिया झांजरी आनपरी मजदा रौंग ॥
गहेरी ओन दिया आगम बेहेत है मौला लगावे बेडा पार ॥ नव ॥.
गेहेरी ओनदिया अगम बेहत हैं मौला लगावे बेरा पार ॥१८

१९१

झनन झनन बाजे पायलिया मोरी राजे धुलारी डोरे अंगन माये ॥ माखन मदमात वाजिते रे नैनान लाजे अत सुख जागे माग॥

१९२

होताज पी हो पी के देसक रीहो बोला सींगार वा मा० ॥ बहत दिनन पछी मीलन भई लवा मुजपुर वा होता ॥१॥

१९३

जनम भयो री आजनंद मेहेल घर बाजते अनंद बधाइ री.

राग आसावरी

१९४

दीलभर जानवे जानवे दीलनु राजी रख भावे
गला भर आवे॥ ध ॥
अंतरा लेनु तो हसनदी मगरुरी बोनामुवे
दीक दीवाने ॥दील

52

रामचौंद्र राजमौनी च्यतरंग दध स्यावरमातर रंदा
गध ओतनधीयो सवीमार राधसदध ॥

नीधासीतदसौनिसधनधौ दिं सनिनमा रेदेसा दाधौस मधानी
नोससतनतनज बारे दे दिंद्र द्र मद्रे द्र द्र द्र गिधजनतन
नोतननम दिंसनिनन मसदे रनमा गरे नीनी धानीनी
ध समगमध गगरेरेनीनी धनीसा नीनीधपमग
पमगरे गरेसा ॥ नीरधोऽ धीं तागमागमगरा धी धी कोट
नगनगा धातगात कोट नकीटनकधीधांग धुमकीट
धीं मत की टत ऽजे यतीये यतीयेया बीनीरवानकोर
पानधिताजानीनो दुदमी दिसाधाजध ॥८॥

~~जौनपुरी~~ असावरी ॥ चौताल ॥

९५५

कानन कर मूंयें सार अब रे जान देहु पुकार लगा
लगार भगरियानौं बीधानौ ज्यार ॥

अंधराग येलो जाय जसो दासोके यो जाय
आपने लंगर धीठ कोरमो रे गडा ।

जौनपुरी ९५६

बाहुदरवाजे वा ठाडे दरवान तिनके चरनन लागनदे ॥
हो ॥

पारना पाइये गुन समुद्र आथा कोन बिवातेरीये क हा करिये कौन भाव जानीये ॥ध्रु॥ गुनग्यान चे मे की जो ही लागत है राग सोर तान कियेघरा आइये ॥४॥

(२५) 201

(गीत) राग भीमपलासी

आव रंग सोनारे चंपा ॥ अंबा मोली पर मधु रे मकरंद पराधर किरन पर अनपात पे रंजी खडी अन प्रेम कोल पदम मारे ॥चंपा ॥१॥ जिनने कारन तू रची जोगी के सुख संपु मानरे चिरजीवो श्री जगन्नाथ जाके सीर मोर बैजु बावरे ॥२॥

(२६) राग हींडोल 202

फुले बनटे सु बहार आई नरनारी मिल करही अनंद ॥ हमतो कंथ खोलन बनकी जो आवी निसदिन यो ही आनंद ॥३॥

(२७) राग पूर्वी ता. तिलवाडा. 203

जमियत कीजे मोरी हजरत सुलतान मसायक निजामे दीन औलीया मेहेबूब इलाही ॥ चौदस मे नामले हावा. जर जरी जर बखस मैको ग्यान मान सुर राग तान सदका ऽऽ. अमीऽर कोऽ ॥३॥

(२८) ॥ राग जैतश्री ॥ ता. अद्धा चौ. 204

चलखऽ सुजाऽऽनऽऽ मेरे हि आ ये ॥ अनके बालक पाऽऽऽ येऽ होऽऽ राऽऽ जा माऽऽऽ नऽऽ मेरे हि आ ये ॥४॥

राग तोड़ी १५५

आइ रे मंगदरवा घर आजी मन काइ
आजु रे ॥ कर सुघर आई लाजन्या
आरी लापायी ला बनरा सदा रौं गी के
मंगदरवा मन काजू रे ॥

राग जौनबहार १५६

पी हु परदेस वा माये कैसे कर खेलु
ये अब धमार पिहु ॥

होरी बिंदी बहार

सूहा १५७

का ऽऽऽ न ऽ न सुना — ऽ ~~~ । कीये बा — त मोरे — ऽऽ
जिया कि ऽऽऽऽऽ ० ऽऽ ऽऽ ॥ अं ० ॥ सुदबुद — ऽऽ कोनी था ऽऽऽ
होके — इ ऽ त — ऽऽ बौ ऽ ते कहीं मोरे, पी ऽ की

१५८

कुकम की ऽऽऽऽ बा — थी साहेब के अं ० ॥ मोमद रसा — ऽऽ
जो ही ऽऽ कर मोदे ऽ सारी — ऽऽ बजा कोबा ऽऽ ने ऽ कोना ऽऽ मुऽ
खा ऽ न ऽ मो ऽ ऽऽऽऽ ॥ ध्रु ॥ ध्रु

१५९

गैरही गैरही नादियां बैहत है पवन चपकन कुरवैयां
~~मैं हीन दिया~~ मोरी दइयां ॥
गहरी न दिया बरीयां न लागी इस ब धरू न रोंगी
पार मोरी दइयां ॥ ध्रु ॥ ध्रु ॥

॥ संगीत रत्नाकरे रागविवेकानाम द्वीतीयाध्यायो लिख्यते ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ अथ द्वितीयो ऽध्यायः ॥ अथमन्येन
॥ संक्षिप्त प्रसन्न पद पंक्तिना ॥ निःशङ्को निखिलं
॥ रागविवेकं रचयत्यमुम ॥१॥ पञ्चधा ग्रामरागाः स्युः
॥ पञ्चगीतिसमाश्रयात् ॥ गीतयः ~~पञ्च~~ पञ्च शुद्धा या
॥ भिन्ना गौडीच वेसरा ॥२॥ साधारणीति शुद्धास्याद्वक्रैर्ललितैः
॥ तैः स्वरैः ॥ अवच्छिन्न स्थितिः स्थान

(२८) राग श्री टंक २०५

आज आनंद मुखचंद्र देखी पिया नीऽके ऽ
करत बैन पियामनारे ताऽ गनकों अजग॥
बालापन जोबनकी भरी· मदके भरी अखियां
मोतियन मांग सुहाल सुहागनकों अजग॥ई

(३०) राग २०५ ताल तिताला

बरस बेद जुग सरस आवनकों धारे
धाऽरेऽ गारे ताऽ गु आजनकों ॥
मोनदीन आदुज बसन तीजो हिंद नलेऽ
अलाय दरसनको॥३॥

(२९) राग भूपाली आया २०६

ततड़बे ततधाने नकर सबबाऽजे
बजाऽ आइकों भाद्रसो पी मोरे मंदर बा·
॥ चतर गुधार अताई बेचैन· मोबातनके
सीधर ना॥३॥

56

(३२) रागबागेश्री। २०८

तनन तन देरे नाऽऽऽऽऽ तदाऽरे. तदरे दानी
ताओदृम तन अनननन नेते ताना
दानि दानि ओदानि तनि
दानी तनम तनम ॥

द्रेतोम तेनम तनम ॥ देरेना तदरे तदरे दानी
नगंननान धिरकिटतक धा धाकिटतक
धुमकिटतक धुमकिटतक धिरकिटतक
धिंनत्रान ताऽ धाधाधाधा ॥ तननतन ॥१॥

(३३) रागमेघमल्हार त्रा.ताल. २०९

पावसकलकीऽऽ बाऽमराई ली सजनीऽ रजनी
नातुहाऽवेऽ मोमनमोऽऽ पिहरवाऽ ऽऽऽऽ बीन ॥
गरज गरजा गरजेऽऽ ग. गमधम गगनवा
चौंदेन बोऽऽ ल मोरारें जिउऽऽ उगाऽऽई
चमकत बीजरीयां आली निन दिन ॥१॥

(३४) मीयांकामल्हार २१०

आइकन धनमो बीरे धार केवर रंग
मद भराइ मद भराई आई ॥ वंदन गुलाब
धिवलावों करभर गालन लगावों सब
सुहागन मिलकें <u>मंमदशाको</u> पेहेरवा
पेहेनाही ॥१॥

(३५) ॥ रागजयेल ॥ २११

झाको रन पानीनु बड्डीबाजी बूंदन
॥ धामेमनरंग धनगरजात अंलके
ठाडी यनाजी ॥१॥

राग भीम पलासी 292

मनभावन इन १ बेगी कामिनी करु आनंद [illegible]
कछु [illegible] जिन जो मनमोहन धन [illegible]
नीन [illegible] भरे नि मानोंगे मन [illegible]
[illegible] ॥

(२८) 293 [illegible] ता० चिलवाडा
नाचिये [illegible] मानत माहन [illegible]
[illegible] कछु [illegible] गुनियनको
[illegible] माल

(२९) 294 राग [illegible] ता० तिलवाडा
कोउ दो बताय पियामिलबेकी कलवा ॥
अवगुन भरी [illegible] गुनन हि मुने बिन [illegible]
संगरवल ॥

(३०) 295 भैरवी को [illegible] धमार
अरी [illegible] गुन मा [illegible] मन [illegible] बैन
लागे [illegible] बरन [illegible] नवबन [illegible]
कोइ साव दी कोइ [illegible] ॥

(३१) 296 राग [illegible] ता० त्रिताल
तुम हम वचन जिन बोलो पिहरवा और न मोर
नैन मिला वले हाँ हामीन करल हो बाऽऽऽऽऽ र ॥

(३२) 297 राग भुपाली ता० सवारी
फुलवन सेजवनाक अबे ला बैनारी अन धन मंगल ॥
अनंद भइलवा मोर [illegible] मौंदर मे खुब धावी
मुबारिक लगन धवावी व्याहान आयों सदारंगीले
मौमद मा

श्री गणेशायनमः ॥ अथ द्वितीयोऽध्यायः ॥ अथ प्रथमेन संक्षिप्त
प्रसन्नपदपङ्क्तिना । शार्ङ्गिणा निखिलं रागविवेकं स्चयत्यमुम् ॥१॥ पञ्चधा
ग्रामरागाः स्युः पञ्च गीतिसमाश्रयात् । गीतयः पञ्च शुद्धाद्या भिन्ना गौडी-
च वेसरा ॥२॥ सा धारणीति शुद्धा स्यादवक्रैर्ललितैः स्वरैः । भिन्ना
सूक्ष्मैः स्वरैर्वक्रैर्मधुरैर्गमकैर्युता ॥३॥ गाढैस्त्रिस्थानगमकैरोहाटी ल-
लितैः स्वरैः । अखण्डितस्थितिः स्थानत्रये गौडी मता सताम्
॥४॥ ओहाटी कम्पितैर्मन्द्रैर्द्रुतद्रुततरैः स्वरैः । हकारौकारयोगेन हन्न्य-
स्तचिबुके भवेत् ॥५॥ वेगवद्भिः स्वरैर्वर्णचतुष्केऽप्यतिरक्तितः ।
वेगस्वरा रागगीतिर्वेसरा चोच्यते बुधैः ॥६॥ चतुर्गीतिगतं लक्ष्म-
श्रिता साधारणी मता । शुद्धादिगीतियोगेन रागाः शुद्धादयो मताः
॥७॥ षड्जग्रामसमुत्पन्नः षड्जे कैशिकमध्यमः । शुद्धसाधारितः षड्ज-
ग्रामो ग्रामे तु मध्यमः ॥८॥ पञ्चमो मध्यमग्रामे षाडवः शुद्धकै-
शिकः । शुद्धाः सप्तेति भिन्नाः स्युः पञ्च कैशिकमध्यमः ॥९॥ भिन्न-
षड्जश्च षड्जाख्ये मध्यमे तानकैशिकौ । भिन्नपञ्चम इत्येते गौडकैशि-
क मध्यमः ॥१०॥ गौडपञ्चमकः षड्जे मध्यमे गौडकैशिकः । इति गौ-
डास्त्रयः ष[illegible]टक्कवेसर षाडवौ ॥११॥ स सौवीरो मध्यमे तु बोट्टमा-
लवकैशिकौ । मालवपञ्चमान्तोऽथ द्विग्रामः षट्ककैशिकः ॥१२॥
हिन्दोलोऽष्टौ वेसराख्ये सप्त साधारणास्ततः । षड्जे स्यात् रूपसाधार-
शको भम्माणपञ्चमः ॥१३॥ मध्यमे नर्तगान्धारपञ्चमौ षाड्जकै-
शिकः । द्विग्रामः ककुभास्त्रिंशद् ग्रामरागा अमी मताः ॥१४॥ अथो
परागास्तिलकः शकादिष्टक्कसैन्धवः । कोकिला पञ्चमो रेवगु-
प्तः पञ्चमषाडवः ॥१५॥ भावना पञ्चमो नागगान्धारो नागप-
ञ्चमः ॥ इत्युपरागाः ॥

...बन गरब सकी जिनकी जिरों रहना कहै।।
(अबना रहेगो ।। मधरे रसना ते बोले हों जासन
मो आगे नेककी कहेगो ।। ३।।

४२

हेम राग २२४

दैयारी मे कैसक जायपुकारू मोरे तो जियेरा
कल नाही ।। आयो मिले मोहें रसके रसीले नैम
धारम सब वारू ।। १।।

मलोहा के दारा २२५

मोंहर मालनी कुडीवें आसकी मेनु नानना पूछी
मार ए मंदर मालनी ।। दुखवा सुखवा दीजे
सबनकों हामरे करमबिच येहि लिखों ।। १।।

(४५) जैजैश्री ताल आडाचौताला।

ताऽऽऽऽ नरे तदे दाऽनी उदानी दानी
तनदे तादे दाऽनी उदाना तोमत
ननननन देरेना ताऽरे तदाऽरे तादे तारे
दानी ।।

२२२

(४६) बागजिंदनी ताल तिलवाडा।

रैनदिन कैसे कटे रीऽ।। दैऽया नई आ
मोरा संया ।। दरस पिया बिन होलमलनी अ...
पलपल देह घटे रीऽ दैया ।। १।।

11/3/61

60

९१

२१६

ता, नोम दीम दीम तननननदे रेना
तनदेरे ना तदो तदरे दानी ताजते ॥
हाया यायोम यलली यली यली
यला ला ला ले ॥१॥

(४३)

२१८

राग जैत ताल तिलवाड़ा

मोऽऽरे बाजु आनंद कऽरोऽ नीऽऽक दीऽन
अनंद कऽ रो निऽक दीनाऽऽ ॥
ए चतुर जुग जियो करारे बक र को अटल
रहे तोऽरा बाजु ॥३॥

(४४)

२२०

राग जैत [illegible] ख्याल

ताऽऽ नोरे दीम तानो तुं द्रे द्रे दाऽनीर [illegible]
दानी तदरे दानी ॥
कैसे कैसे बोलत मोसे लोगवा [illegible] [illegible]
बिन पूछे नही आवन नंद को उ बात ॥

२४

२२०

छायानाट

सबनि सजनी गिरधारे तोरे उमाये दिन बीते ॥
अबद बदी अजहु नहि आयें मनुवा कीसे मन चीते
॥३॥

२२८

खट राग

बिद्याधर गुनियन सों कहत अरि से कछु गुन
चर्चा की [illegible] मे सोते सोन्याय निरंजन
के आगे नहि तो गुनियन के चरनन परिये ॥३॥

२४

१५८ ५३ २२८

१९ मेनाजाउगी येचरचा मैनिकम जाउगी अपनै घरमोग रहे बारमोहे योकल योकल मोसकरधर नारहु मेनाजाउगी ॥ २॥

(राग पूर्वी ध्रुपद) २३०

चकीबमन गल मौमल भौभक मा नेपबरनी कईना जाल उपमाचिचवल भौमल ॥ कौलाप बरनी कासकी नाद्गर कुंड डलमदउनमा साइद साड तेड हि साडमाइन सा चिरवलमौमल ॥१॥

२०

231 पृ. 50 ६ कुं

हलं न के हरवा गंद लागु रे मालणियां डारब ने के गरे ॥
ौर कुकर खीस सेहैराबे राजे बनरी केसर रे मखदल ॥ १ ॥

232

ा रे दे गरलगी जबाहि जानो सुख कितवलगया
रव ॥ सदा रंग ढोलन मिलिया मनुवे सुख दिह्या
ाडेर बाब ॥ १ ॥

80

1/1/60

62

63

राग भैरव.
असंपूर्ण, रीषभ मध्यम. धैवत कोमल. गंधार निषाद
तीव्र. आरोहीत रीषभ सोडून जावे. आवरो-सर्व-ल.

(२) रागआसावरी. साडव असंपूर्ण.
रीषभ गंधार मध्यम धैवत. कोमल. निषाद.
वर्ज. आरोहीत गंधार वर्ज.

राग जोनपुरी.

९/१०

(४) राग अलैया बिलावल. असंपू.
रीषभ. गंधार धैवत. निषाद तीव्र.
मध्यम कोमल. आरोहीत मध्यम वर्ज.
आवरोहीत सातीसूर.

राग टोडी. संपूर्ण. (५)

रीषभ गंधार धैवत कोमल.
मध्यम निषाद तीव्र.

राग भैरवी संपूर्ण. (६)
याच आरोही आवरोहीत पाची सूर
कोमल.
(७)
रागसींधभैरवी संपूर्ण.
परंतु रीषभ तीव्र.

गंधार धैवत वर्ज.

३८

(९)

राग मुलतानी. असंपूर्ण
रीषभ गंधार धैवत कोमल. मध्यम
निषाद. तीव्र. आरोहीत रीषभ धैवत वर्ज.
आवरोही सातीसूर ला.

१।१।८

राग पूर्वि असंपूर्ण.
रीषभ धैवत कोमल. गंधार. मध्यम. निषाद
तीव्र. आवरोही मध्यम कोमल लागतो. ष. पं. अ
वर्ज.

राग यमन संपूर्ण.
आरोही आवरोहीत पाचो सूर तीव्र.

राग यमनकल्याण. साडव आ
सात मध्यम वर्ज. रीषभ गंधार धैवत निषाद
तीव्र.

राग भूप. ओडव.
रीषभ गंधार धैवत. तीव्र. मध्यम. निषाद वर्ज.

षाडव
राग केदारा असंपूर्ण.
आरोहीत रीषभ गंधार धैवत वर्ज करून
गे केला हीजे आवरोहीत गंधार वर्ज. मध्यम कोमल
तीव्र दोन्ही लागतो. रीषभ धैवत निषाद तीव्र.

रीषभ पंचम आरोहीतवर्ज्य आवरोहीत सानी सूर लागतात. आवरोहीत मध्यम कोमल.

35
91-91

राग बहार. साडव असंपूर्ण

रीषभ आरोहीतवर्ज. मध्यम आरोही आवरोहीत कोमल
रीषभ गंधार निषाद तीव्र. धैवत वर्ज. आवरो. साहीसूर

राग सींधडा साडव असंपूर्ण.
रीषभ तीव्र. गंधार मध्यम निषाद कोमल. धैवत वर्ज
आरोहीत रीषभवर्ज आवरोहीत साही सूर लागतात.

राग काफी. संपूर्ण.
रीषभ धैवत. तीव्र. गंधार मध्यम निषाद कोमल.

राग कामोद. असंपूर्ण.
रीषभ गंधार धैवत निषाद तीव्र. मध्यम कोमल.
आरोहीत. गंधार मध्यम धैवत. निषादवर्ज. आ. सातीसूर

राग साधी झिंझोटी. असंपू.
रीषभ गंधार धैवत तीव्र. मध्यम निषाद कोमल.
आरो. नि. वर्ज. आव. सातीसूर.

राग पाहाडी झिंझोटी. ओडव.
रीषभ गंधार धैवत तीव्र. मध्यम निषाद वर्ज.

राग मालकौस. ओडव.
रीषभ व पंचमवर्ज बाकीचे कोमल.

राग खंमाच असंपू.
यात मध्यम कोमल. व निषाद आरोहीत तीव्र.
आवरोहीत कोमल. बाकीचे तीव्र.

मध्यम कोमल. निषाद कोमल. तीव्र दोन्ही
बाकीचे तीव्र.

38

राग परज असंपू.
यांत रिषभ धैवत कोमल. गंधार मध्यम निषाद तीव्र.

राग शंकराभर्ण सं.
यांत मध्यम कोमल बाकीचे तीव्र.

राग मांड असंपू.
यांत मध्यम कोमल. बाकीचे तीव्र.

राग पिलु असंपू.
यांत रिषभ व मध्यम कोमल व तीव्र दोन्ही लागतात.
गंधार व धैवत कोमल. निषाद तीव्र.

राग सोहनी साडव.
रिषभ मध्यम कोमल. गंधार धैवत निषाद तीव्र.
पंचम वर्ज.

१००

राग कालींगडा संपू.
रिषभ मध्यम धैवत कोमल. गंधार. निषाद तीव्र.

राग गारा. असंपू.
रिषभ धैवत तीव्र. गंधार कोमल तीव्र दोन्ही लागतात.
मध्यम कोमलच. निषाद कोमल व तीव्र दोन्ही.

67

राग रामकली असंपू.
रिषभ मध्यम धैवत कोमल. गंधार निषाद तीव्र.

राग देसी तोडी. अवरोह पू.
रीषभ कोमल तीव्र दोन्ही. गंधार मध्यम धैवत
निषाद. कोमल.

राग ललत. साडव.
यांत पंचम वर्ज. रीषभ धैवत कोमल. गं. नि.
तीव्र. मध्यम कोमल तीव्र दोन्ही.

राग ख्याहारी. अरसं पू.
रीषभ धैवत निषाद तीव्र. मध्यम कोमल. गंधार
कोमल तीव्र दोन्ही.

राग बिभास ओडव.
संशाच्या आधाराप्रमाणे रीषभ धैवत कोमल गाहतात व तीव्र
ही गाहातात रीषभ धैवत तीव्र घेऊन हीं दुसऱ्यानी जोगवाय
गात.

राग तिलंग साडव अरसं.
आरोही आवरोहीत धैवत वर्ज. रीषभ गंधार तीव्र.
मधम निषाद कोमल. आरोहीत रीषभ वर्ज.

राग हींडोल. ओडव.
रीषभ पंचम वर्ज. बाकीचे सूर तीव्र.

२१०

१ २३३ ३४

कैसें कटे रीसजनी कारनरतीया ॥ कै ॥
मोहे तन बीन घडी पल छीन व्याकूल मन हैं व्रम बीन
मोरी आली ॥ कै ॥
सनदपीया मोरी मानन नाहीं बार बार म्रकें बीनी
च्यावृवाई मोरी ॥ कै ॥ १९

२ २३४

मथुरा सें शाम गोकूल गई केहरायीन प्यारे सोचत रहे
॥ म ॥
कूबरीन शाम मोहे छीन कीये बीन दरसन नैना तरसत हे
कोई सुगर पीया सें ज्याय कहो अबे हम कूं छांड सोचन
के नरो ॥ म ॥ १९

२३५ ११ और १०

पीया कों संदेसा मोरा कहीयो ज्या कागो रे ज्यो रे ज्यो रे
॥ पी ॥
याद सताव न मोहे दिल की बातीयां देख बीन बालन पर
न डीया प्यारे प्यारे ज्यारे ॥ पी ॥ १९

२३६ ४

कैसें कटुं नहीं परन चैन हमे भारी रूमीयाहा बालम
राजे ॥ कै ॥
च्यां दपीया बीन नीदन आव मैको पलक बन कागी ना
रात सारे रूमीयाहा बालम राजे ॥ कै ॥ १९

२३७ ५

सीतान ज्यको ओगं यांवी मेरो ॥ जी ॥ कारन कोरवी नारे
हुई है ॥ मे ॥ बैठ रहा पीया अपने मेहल में रे रामसौका
जाना बालम री ॥ मे ॥ १९

रमत मोरे करन न उहन जीया मे सांद ज्ञान नन रन
की बनी या मे ॥ या ॥

प्यारे गई मोरी सुध बुंन कोनी सोनन न घर बनन मे
येक पन करन मे ॥ या ॥ ६

२६८ भैरु दुमरी 3६

दी ~~[illegible]~~ दीरवा के न्यांम कोरे कुतन कन्हैया न मुजरे मारे
पीके का यन नरवी ओ धंदुं मन मोहन मेरा प्यारा ॥ दी ॥
ओदें म बावरी बन बन ढुंढत श्याम सुंदर वो हैं पैदारे के
प्याहु कहां गया ओ मोर मुकुट वाला ॥ दी ॥ ६

२६९ तीलक कुमरी 3७

कुन को हैना नेहा कराने वे नैन या ॥ नैं ॥
सखी नरवी मोरे दरस दे पीया को ईशो जो उन का ओ
मना जो सोन दें दरसुवा जीय जात कराने वो ॥ नैं ॥ 3८

२७०

मैं यांन पकर मोरी नरम का दीरे करपकरन गई
प्यो की मन न का दीरे ॥ बं ॥
नरजगारे ज्य मेरे य बाहुन मोतेर कदर परीया को मेदेर
दुवादीरे ॥ बं ॥ ६

२७१ दुवंरी

काहे दीन्हा छाड़ि पीयाऽऽऽ मोहे बोहि जब ही मगायो बिरव ह
मरोंगी रे ॥ पी ॥
लाज की मारी कछु कहे ना सकत हूं है ज्योबन करत
ज्यार ॥ पी ॥

५७६०

(१३)

धतियनपर धनसोलगे धनधमंड
धहरानाय, (बै) येसावन गमजनदोको
सब्जबागे दिखाताहै बिना भावन
भवनसूना क्रिसे सब्जा खुसाताहै (दो)

सावन बिरह समुद्रमें हे जहाज भई कंथ
तनमनजोबन डूबी है प्रेमे घवआफहरंत
(बो) येभादो धनघोहर घहराय जोकरकर
बौरआताहै उनकओ ~~वह~~ उक बिरहनकी
उतिकडकासुनाताहैं (दो०) भांदोनीं भामिंन
थयीं बिरहधता धनमोह ~~धतियनपर~~
नैननीर सरवरबहै गजत हायकराय, (बै.)
येआश्विन आसपितनकी पपकचंदा चलाताहै
मुकरयह चांदनी विटकी बदनफोलापडाताहै
(दो) आ~~स~~श्विन आशाधामकी पमकात चक्र
चलाय सरदह चंदकी चांदनी तनफोलापड
जाय, (बो.)

X ११०

39 सजन जद याद आता है जेम दर्या बहता है
दोहा बिन देखे दुख को लहे देखे सुख मे नाहि-
कहो सखी इन द्रिगन से आंसु ~~[illegible]~~ वां क्यों ढराय
शेर) महीना चैत का चमका, तन मका गमस
ताता है इसके खुर्शेद की किर्णे बिरहिणी
को तपाता है, दोहा. चैत चमक चहूंदिस
किरण तपत सी यह घाम ज्यों तन मारत
बिरहिनी, कित धायो घन श्याम,) शेर.

ये बैसाख बिन साजन. ये खस खांना सुलग
ता है और चंदा चांदनी चंदन बदन
चिनगी लगाता है दोहा, करो लाख
बैसाख मे खस सज लखी लख गेह, चंदा चंदन
चांदनी लबहों जलावत देह (शेर)
पुरुष है जेठ का तपना, नहीं आपना कुछ
बसाता है ना आया आज तक का पदू
जो खूब ~~कुछ~~ खबरी सुनाता है दोहा

लाग्यो जेठ तपन सखी पीय सुध गयी
भुलाय काशिद हूं सपनो भयो आपनो
काहा बसाय, ॥ शेर) ये असाढ बिन
साजन मदन तन को जलाता है, उमड
घन घोर दल बादल सो हम पर फौज ला
ता है, ~~बिरह~~ दोहा) बिरह बाढ आसा
ढ की परे गात मे प्रान

२८

२०२

उगावगुळो प्रेमका सोतिनका चदो अकास तिनका तिनमे आयमिलों सोतिनका तिनके पांस ॥३॥

दोहां

२०३

कनकमदाकर नर्मि हो औरदला सीदि भोपालः वानन छोडियें हालकी अंजपुछका बालक ॥३॥

दोहा

२०४

अज्जासुलने मेकहों सो लबाहिकया यो सीस मेनाने मेनाकहों सो मोलहुवा दस बीस ॥३॥

९०७८

॥ श्रुतिर्द्वयं चेत् षड्जस्य निषादः संश्रयेत्
॥ तदा ॥ सकाकली मध्यमस्य गांधारस्त्व
॥ न्तरः स्वरः ॥ १५॥

॥ पादद्वयं शेनेसूची षड्दान्तकोलः धनः
॥ स्मृतः ॥ अप्रश्रेणे लीयते स्वयं तः का श्रस्या
॥ दृष्टाविकृतैः ॥ स्यान्निमे चोक्त का द्वा विनि
॥ मे षैरष्टभिः कला ॥ कलाद्वयाच्चतुर्थी ग
॥ स एव प्रोच्यते त्रुटिः ॥ २॥ चतुर्थी गत
॥ नैव बिंदोरर्धं प्रकीर्तितं ॥ आणुद्वया
॥ द्रुतः प्रोक्तो द्रुता श्यां जायते लघुः ॥
॥ लद्वयाच्च गुरुर्ज्ञेयो लत्रयेण तु प्लुतः
॥ स्मृतः ॥

१५८

॥ श्लोक ॥

॥ चतुर्विधा स्वरा वादी संवादी च विवा
॥ दी पी ॥ अनुवादी विवादी तु प्रयोगे
॥ बहुलः स्वरः ॥ १ ॥ अंशस्योरी विप
॥ [illegible] नाद नह जुकः ॥ श्रुतयो
॥ द्वादशाष्टौ शेषा यथो रन्तर गोचरः ॥ २ ॥
॥ मिथः संवादि नौ [illegible] ते भागतः ॥
॥ एक श्रुतं तरौ [illegible] मिथस्सु विवा
॥ दिनौ ॥ [illegible] मनुवादि नं वादी राजात्र
॥ गीयते ॥ ३ ॥

अनद्रुत.	एकमेका [illegible]	१ मात्रा
द्रुत.	एकमेका एककाल.	२ मात्रा
लघु.	एकमेका [illegible] काल.	४ मात्रा
गुरु.	एकमेका [illegible] काल.	८ मात्रा
प्लुत.	एकमेका [illegible] काल	१२ मात्रा
काकपद.	एकमेका पधरा काल.	१६ मात्रा.
तिस्र.	एकमेका दोन काल.	३ मा.
मिस्र.	एकमेका [illegible] काल	७ मा.
खंड.	एकमेका चार काल.	५ मा.
संकीरण.	एकमेका [illegible] काल.	९ मा.

॥ आत्मा विवक्षमाणोयं मनः प्रेरयते मनः ॥ देहस्थं
॥ वह्निमाहंति स प्रेरयति मारुतं ॥१॥ ब्रह्मग्रंथिस्थितः
॥ सोथ क्रमादूर्ध्वपथे चरन् ॥ नाभिहृत्कंठ
॥ मूर्धास्येष्वाविर्भावयते ध्वनिम् ॥२॥
॥ व्यवहारे त्वसौ त्रेधा हृदि मंद्रोभिधीयते ॥
॥ कंठे मध्यो मूर्ध्नि तारो द्विगुणश्चोत्तरोत्तरः ॥३॥
॥ तस्य द्वाविंशतिर्भेदाः श्रवणाच्छ्रुतयो मताः ॥
॥ हृद्यूर्ध्वनाडीसंलग्ना नाड्यो द्वाविंशतिर्मताः ॥४॥
॥ तिरश्च्यस्तासु तावत्यः श्रुतयो मारुताहते ॥
॥ उच्चोच्चतरतायुक्ताः प्रभवंत्युत्तरोत्तरं ॥ ५॥
॥ एवं कंठे तथा शीर्षे श्रुतिर्द्वाविंशतिर्मताः ॥
॥ श्रुतिभ्यः स्युः स्वराः षड्जर्षभगांधारमध्यमाः ॥
॥ पंचमो धैवतश्चाथ निषाद इति सप्त ते ॥६॥
॥ श्रुत्यनंतरभावी यः स्निग्धोनुरणनात्मकः ॥ स्वतो रंज
॥ यति श्रोतृचित्तं स स्वर उच्यते ॥७॥
॥ स्वराणां निचयो ग्रामो मूर्च्छनादेः समाश्रयः ॥
॥ भरतेनोदितौ शास्त्रे ग्रामौ द्वौ षड्जमध्यमौ ॥८॥
॥ क्रमात् स्वराणां सप्तानां आरोहश्चावरोहणात् ॥
॥ मूर्च्छनेत्युच्यते ग्राम द्वये ताः सप्त सप्त च ॥९॥
॥ तौ द्वौ धरातले तत्र षड्जग्राम आदिमः ॥
॥ द्वितीयो मध्यमग्रामः तयोर्लक्षणमुच्यते ॥१०॥
॥ षड्जग्रामः पंचमे स्वचतुर्थश्रुतिसंस्थिते ॥
॥ स्वोपांत्यश्रुतिसंस्थेस्मिन् मध्यमग्राम इष्यते ॥११॥
॥ यद्वा धस्त्रिश्रुतिः षड्जे मध्यमे तु चतुःश्रुतिः ॥
॥ रिमयोः श्रुतिमेकैकां गांधारश्चेत् समाश्रितः ॥१२॥
॥ पश्रुतिं धो निषादस्तु धश्रुतिं सश्रुतिं श्रितः ॥
॥ गांधारग्राममाचष्टे तदा तं नारदो मुनिः ॥१३॥ प्रवर्तते
॥ स्वर्गलोके ग्रामौ ~~द्वौ षड्जमध्य~~मौ सौ न महीतले ॥१४॥

।। श्री ।।

ठुमरी

262

तोरी सावली सुरतिया मोरे मन भावे
मदभर अंखियां मैं तो आन मिलावे ।।
च्याल अलबेली चलन नवेली देखो हैदर
मोरा जिया ललचावे तोरी ।। १।।

ठुमरी जंगला

263

काहना माने सयाने कैसे करुं मोरी
मुरलीनी मोरी गर हां हुं करत लोरे कर
जोरत है उमे रपरत लोरे पैयारे कान ।।१।।

ठुमरी जंगला

264

...कत गैल चंचल नटवर मोरी कारे कान
...धु बनन हीं आवे मोसे ।। हूं जल जमुना
...रने जात थी बीच डगर मोरे घेरे सावरो
...नं दपिया मैं का रे करुं मोहे जाने ना देत ।।१।।

नीच ॥ निचे भपी गंगा उपर बसे कासी
मधुबन की चिरैया बोले बिरज बासी रे ॥१॥

॥१॥ गजल भैरवी।

२६१॥

मैं जान तिथी परों से अद्धा नहीं कोयी ये बात
गलत है कभी देखा नहीं कोयी ॥
शब ख्वाब में बिलकुल के वो किया लाल हवे गं
पपेर के ख्वा बाहु रन मे बाला नहीं कोयी ॥१॥

मालूम नहीं क्या हुवा है आज म हमसका बेचैन
करबा ये सबी रूकल नहीं कोयी ॥२॥

एक जान नहीं है हुलत ~~हुआ~~ दादि लेना
को महमाना गोया के पहेल रहने का
उस का नहीं कोयी ॥३॥ मेरा निशं ली ख्वा
वो पे वे उ आयेगा बेरक लगदीर के ली
को मिटा ला नहीं कोयी ॥४॥

३३

९१

॥ राग जैजैवन्ती ॥

धीमा ते. २६५

आयो अत मत मन बातो पीहरवा भोर ही हाम है
आन डागा चौं सोतन संग री रैन नहीं या गो ॥ री
आलसानी अखियां पै छानी हरत पिया मोहे जानत
हूं सो लन निस जागे ॥ ३ ॥

९१-२०

X ९१५ भैरवी ठुमरी ९५

२२०

माई वे जोरी सावरे लट पट रीच्याल मानो मद के रनर्खूप ज उतरो मंद लाला ॥ क रैन बी जगाइ कर केल वनियन बिच में दूर श्र रगये आधु रन प्यारे हर मुख अंजनगाल ॥ १॥

ब्याहारी २२१

दर्सन के नो पाव मोरी आली कोन जतनन करन घरी पल छिन मोपे भारी पियाबिन ॥ उन बिन बिरहा सतावे न भावे मुजबिर हनको कधु ना सुहावे मोरी सजनी तरप तरप बीतत सनद मोहे आब निसदिन दर्सन

X रागपीलु होरी २२२

जर दीयो मोपे रंगही मोरी अंगीया चुनरीया भीज गइ सगरी ॥ हो तोना बोलो लाज की मारी नातर हो याको दगही मोरी अंगीया भीज गइ सगरी ॥

X ९१५ होरी २२३

लोरी बिनती करत हो नामारो पिचकारी कान ॥ सग री चुनरियां सिगि मोरि का हे करत बरजोरी कान ॥१॥ देखत है सब संग की सहेली नातर दुंगी गारी का न ॥२॥

९८

परज

२६५

देखि ऐसी चतुर नार डगमगपग धरत जात
च्याल टालदे खि वाकी हम सो पग थर थरात ॥
अंग से जोबन चुवात मुख सो शशि हूलजात
वाकी छब देख सनद सगरी छब भूल जात ॥१॥

राग तिलक कामोद.
ठुमरी २६६

दर्सन के से पाऊं मोरि आली कोन जतन कर
चछि पल छिन मोपे धारी पिया बिन दर्सन ॥
न बिन बिरहा सताये न आवे मुज बिरहन को
क धुना सुहावे मोरी राज नहि तरप तरप बीतत
नन्द मोहे आवा निस दिन ॥१॥

राग भैरवी. २६६

एनी कारी लगीया वे नैना दिया नोका ॥
ान बुरे नैना दि दिठी लाखन गल में ही पुछी
केनू मे आखा जिंद मुठी मुठे हन दिल दर्द भरदे
मे खडी नगर हूका वे नैना दीया नोका ॥ एनी

२६५ भैरवी. गजल ता. पश्तो.
अज अजल दार तवजो मुबेलो. चमनाक दै बहस्ने
ह बेलो. ॥ सदूबलाआरद बजाने आषकां सी लसीले
ुबानिये गे मुवेलो ॥१॥ सामती अज खोप पोशीदा
ादा पेश सेहरे न गैस जादु बेलो ॥ सर्वमे जुबदु
सोइनेबोस्ता अजर हावाचे कामत दी लजुबेलो

।३।।

॥ श्री ॥

भैरवी

२९८

ती खे नैना चितवत काहे मारत लान बरजोरी कान कारे कारे दृगरत नारे कुटिले पव धनक बान ॥ चांद कहत हर मो हनि मूरत बन सि याबआये हरत प्रान ॥ १ ॥

ठुमरी मि॰ चांदकी

परज

२९९

च लो हटो कान मो सो बो लो ना तो हे जान तहो अलहोनट खट ॥ रैन गमाके भोर भये आये तो है लागर ही सो तनकि चटक ॥ १ ॥ च॰ ॥

२९९

सार्ग कच्छा राग ताल ब्रम्हसोता

ये बन माली बन बन डोरै तूं न समा ॥ ध्रु॰ ॥ घेर घने रेत मन प्यारे ग्वार ग्वार ॥ १ ॥ ये ब॰ ॥

खंबावती ता॰ सवारी

३००

आ ली री मैं जागी सगरी रैन ना ही आये पिया अली री ॥ हर सपिया को आ खियां तर स रही है का बिद रा खो जि या सगरी रैन नाही आये

श्री

राग पहाड़ी झिंझोटी

२५४

जारी वे छैला बायनुवा करे बाना विछ ला
बायनुवा लेरे को इह तैं आया पिला जोड़ी
याद्हा होला री वे प ओरारजोरी या दा ॥
आं वुवे देह टगो री खवी करे लोदी
कें थ ना मिलया रारी जोड़ी यां दा ॥१॥
लै के घड़ा आयो री पानी डा ने च लियां
पानी डा घर लाई थंडे ना लवे दा हो ला दिय
॥२॥

२५५. राग पाड़ झिंझोटी आसा

दर्द आं वल के देही पीड़ नी मेरे आमिया रा इ-या
दैवे नजारा माफ करो तबीबी रे नी

सजणा मैं यार दे हाट कड़ा मैं इंगरा ला दीहीर
नी मेरे ॥ आं मन के गये आं जत ना आये
मनन ही बांधे धीर नी मेरे देहे ॥

२५६ पहाड़ी झिंझोटी.

हो राजन देदा नौकर आये नी गोरी ये हो राजन.
देवजी मंग दे रही डेरा. हो राजन ॥
डेवजी डेरा नाहे देवुं गी छोटे देवरा. कंथन दी
घर मेरा हो राजन ॥

॥ श्री ॥

92

राग चैत्ता गौरी. २०१

येरी होतो आसन गैली पासन गैली कुगवा दरे मै को नाम ॥ जबसे पिया परदेस गई लवा. ~~सुरेनारहे पर आवनकी~~ १३ई ईनो दीनो पाय गए॥

९१

(28)

।। श्री ।।

श्रीराग

+ लागो हिआवरे

~~ऐसो होलो आसन~~ गैली पारसन गैली

कुगुवा[illegible] द रे मैं को नाम ग।। ये री ।।

९५

धानगनी मुभआलमहुरतसबमिल गावोबधा
वन बसौ लोकीमुबारकीं ।। जीवहु जागहु
कोटबरस दातेगमोमदसा गुनिजन के
गुनपारखी ।। ३ ।।

तराणा चे. ते

३०३

द्रे द्रे द्रे द्रे तननन. देरेनातदरे दानी. द्रे द्रे दानी
त द्रे दानी. द्रे दानि द्रे दानि दानी तद्रे दानी. दे दा
नित द्रे द्रे द्रे द्रे तननन. तदारे नितारे तनारे

तद्रे दानी ।। नादिर दिर दिरदिर दीर
तननजनन. धाकिटतकधिरकिटतक

नगाधिरकिट तिरकिटतक तनन.ननन. दिरदीर
दीर तनन द्रुतन द्रुतन तदरे तदरे तद्रे दानी

तद्रे दानी धाकिटतक धुमकिटतक गिगनगधा.
गदिगनधा दिर दिर दिर दिर धा. नादिर दिर दिर दिर
धा तकधागनधिन नाकिर किट

नगतिरकिटतकधा नगतिरकिटतकधा
नगतिरकिटतकधा ।। ।। ३ ।।

३०४

माले के बदरी या जा व दो लन खां के ना ले ग ला कर हैं दावे मा ।। सर दूर के कीतो जि ले व ति लवल जि न लु आवना प ल फिर वे मा ।।

३०५

अरे मन काहे कु सोच करे रे ।। सोच करे कुछ बन न ही आवे धीरज क्यों न धरे ।। अरे

३०६

ये दरदन सीने ये मन ज़ख्म बेनियाज़ दयी ।।
बहेर उंमके आज़ब तीर बेकमा ज़ दयी ।।

३०७

ये मैबूब पीर चस्ती हज़रत सुलतान न जामुदी औलीया ये मैबूब ।। करतार आपी बनाये नूर ले मामूर सूरत खूब ये मैबूब. ।।

३०८

ये कलकस जो गई थी आली पिया मिलन कु धाई भूल गई हूं आपनी सुद नेकन लाज़ाही आगनु परोसी ता ना देवे वाके सात हु ले [illegible] मई ।।

३०९ आडा चौताला.

मातीऽ दुलही रे मैंदी लावन आव तोरी रे दैंग ।।

राग पूरबी धनाश्री · ६

३४०

बलंबल जावूं मितालोरे या नगरी के लोग बुरे ॥ लेचल दिसेवा मायी सदा रंग पाछे परे जग रे ॥ लबल ॥

अरे मन काहे कु सोच करे ॥ सोच किये से क्या होत है धीरज क्यों ना धरे ॥ १ ॥

३९५ रागमालकसरी.

जोबनानुवे धुवे दासरीखन करत बाये कागी
औरसां हावे. ॥ १ एक दीबायेलाली मुसदीबी
लाही सदा रौंग औ लो.

३९८ २ ल. लीलवाड़ा

नननन ठ म के पग पाड़ यलबाजेड़ ॥

हतेहारे अनुवठ बिछुड़वा धुंगरूबाजे सनडना ॥ २

३९१३१८

३. ३९६

ठडे डोन तुं स्पां डेना हु लागी ड़ड़ड़ड़ड़ड़ ॥

न बौंडाहि तु स्पारूं माडा अहाड़ रौंग ॥ ३

op

राग माची ३११

पनघट वा कैसे भरन न जावू मां यी री बीच गेडे रोके रही लाग धरे तेनि करत मा यी दूबर मयीला आ ब का हा कि जि पे को न डर तन ने ग ११।

३१२

आ ब हूं लो क र सागर ना माही. देखन. को पियत कारने ग बरवत की काहू सन डरे परे लेते हूं तन मोतन.

तेलाला ३१३

काहु कि रील काहु करे सरवे री मोत पीय जो कोई करे वसे अपने मन को ।। वू आवी लन रंग लु मको मेई रवान सब के ऽऽऽऽऽ सदारंग बार आयो रे।।

तेलाल ३१४

कासकुवरवा जाइ कहा तरा. मोरे हतबा ना यन घर के क

धमाले ३१५

बोलन बिन कबहुं चैन हि परत पीहरवा जो चाहे रस आ ।। और सन से तुम थ जाई पील को मनके रंगीले हम बो ना सुनावो ।। १।।

श्री

रागमुलतानी

३२४

गोकुल गामको छोरारे बरसानेकी नार ।।गो।।
इन दोउ मिल मोहे लथीरे भयी सदारंग ने हाल ।।

३२५

आकोमन आला सौंगा रहे जैसे पान पाछे नरह
फिरे ।। चलो देखो सखीबे कोन हे हजरत ख्वाज
मीर दरद आकोमन ।।१।।

३२६

भवर वाहबेल बसे कीनो री. भवर ।।
आपने बागीमे भवर लभानो मेहेरबानसु.
कबु वेना स्नेह करुंगी ।।१।।

३२७

कवने देस गई ला पियामोरा रे जुगुवा मै तो वाडे
सकेबलहारी कवन ।। उनबिन सदारौंग कैसे भरे
दिन बीतगये जुगुवा कवन ।।

लोकचवाकरे इलना।

राग सींधूरा

3913

319 होरी स्वॉ०

ना दै या मे आबना जावो द द बे पनसे बीच मे ठाडे द द के छिनै या ना ।। नावना जानो गावना जानो आ लो श्रिजके बसैया ।। ना ।।

स्वॉं० 320

अब मोरी सांवरिया को [illegible] सुन [illegible] नंदिया साव के ले कर आवु [illegible] तोरे पास

धमार सुघराई जी

321

काहे तुम हाहा करहु टे हो मोहन आज वोइ ठगकी ने ।। इत नो ही मे भुल गये तुम निपट सदा रंग भीने ।।१।।

322 होरी स्वॉं०

आन आरो सखि नंद मेहल मे वात सरस सो मन संग सो चे ।। सबनि सुनत मुरली की धन के अरब [illegible] [illegible] के [illegible] के अंग तो साल ।।२।।

काफी 323 स्वॉं०

ओ ही रे आओ के [illegible] तुम [illegible] चला पिचकारी [illegible] चलत लरंग [illegible] मो पे भीज गई [illegible] नंदिया [illegible] हमारी नाव [illegible] [illegible] [illegible] मे रोकत टोकत टोकत रोकत [illegible] [illegible] के मन [illegible] नंद [illegible]

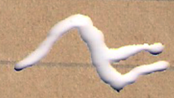
IP

92

बालम तरगै यार ती रखाणवे करम दानी भलावे ॥ कोउ कि सुदा वारीवे हाणवे कीदू दा मुजवे निमाणीदा आ लावे ॥ बा ॥

दादरा. ३२९

लचक लचक च्या लचलत आवत है नंद कुंवर



३३०

॥ धीमा तेताला. राग पलासू. ॥

नैलन मेंडे घर आवी सोना मीया तो मैं बलिं उ सदके जावू ॥ मुखवे खां तो मै जिवा. सदा रंगी ले दरस जिन पावीवे ॥ टे ॥

ये री सखी कैसे के मिलना बनेगो।
उन बिन मोरा जिया बौराना ।। जब से गये
मोरी सुद हु ना लीनी छिन दुतियान बिरमायो
।। १।।

ब्याहुगचीचाल. पदतुलसीदास स्वां.न.पी.

332 तेताला

आज रहो मेरे प्यारे रघुबर ॥ आज कि रैन रहो मेरे प्यारे ॥ प्रात हि होत सवारे ॥१॥ टे.

मैं कैसे रहु मोरी माय कौसल्या ॥ दशरथ बाहरे ॥२॥ नव दस मास गरब मोरे खे लौउ ना। भये मोहें भारे ॥ मेरी कल दोउ धन कोनी धारे मेरे अखियन के तारे ॥२॥

333 राग बिलावल. तिताला. स्वां.न.पी.

सुमरन कर भज राम नाम की छोकुच भव होवे ते राबंदे ॥ एकदिन बाधार जान होंगा सोच समज अपने ग्यान ध्यान की ॥१॥

334 रागमुलतानी तिताला. स्वां.न.पी.

श्री रामा कोकर तारी कर तारी रामा को ॥ प्रान के जीवन पूरन गांवा सुंदर आयोध्या मे बल जाना ॥ सुख पांवा अनंद भइ कवाशिया के आवन को करम कियो भगवाना ॥१॥

(9)

सा॰ऽऽऽऽऽऽऽऽ सुंदर बदन केऽऽ मौंऽ दन दीपत न
मन चौंऽऽऽ जन काहूं जाल धीपेरे ॥
निकसी के सुंऽऽ दर लाऽऽ कहे बाजल
इब्राहीम मुख चंद्र देऽ धकेरे ॥२॥

3913

पूर्य धनाश्री झपताला.

335

पाऽ र करे अजमत नी नाव मेऽऽ री
आ याऽ मै दुर सेऽऽ मुन दाह क तेरी
॥ दीन दुनियाऽ मे ~~नाम तेरी~~ लेनी नाम
रोषन. हौं दर ~~सी~~ का पीर ख्वाजा अजमेरी
॥२॥ 3913

पूर्य तिलाना

3913 336

धरियेऽ गिनल जाऽल लेहारे मौलनऽ
कीऽऽऽऽ आऽस ॥ धनी पल धीन दीन
रैन हाटी लें जोऽलो घट मेऽऽऽऽ साऽस
॥१॥

3913160 336 शंकरा. तिलाना.

पीर रघाऽऽऽऽऽऽ आऽऽऽ मैं कैऽ र
लोऽगेऽऽऽऽऽ एऽऽऽऽऽ लागो जिन
मोसोऽऽऽऽऽ ॥ लेरो रंग ढंग सब कोई
जाऽ ने मौं मदसाऽऽऽ ओनाकेंनकी सोऽऽऽ
सोऽऽऽ ॥३॥